www.thearyasamaj.org

जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष -६० अंक - ०३
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक :१००) रु०
आजीवन -१०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

फाल्गुन-चैत्र : सम्वत् २०७३ वि० मार्च– २०१७

महर्षि महिमा पर्व के अवसर पर दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम को उद्घाटित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ।

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

महर्षि महिमा पर्व सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस से लेकर बोधदिवस शिवरात्रि तक मनाया जाने वाला आर्यों का पर्व, ''महर्षि महिमा पर्व'' सम्पन्न। आर्यसमाज के प्रवर्तक, महान समाज सुधारक, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन कृष्ण दशमी बि० सं० १८८१ तदनुसार १२ फरवरी सन् १८२४ई० को गुजरात के मौरवी राज्यान्तर्गत काठियावाड़ सम्भाग के टंकारा नामक ग्राम में हुआ था।

आर्यसमाज द्वारा अपने संस्थापक स्वामी दयानन्द का जन्मदिवस एवं बोधदिवस इस वर्ष २१ फरवरी मंगलवार से २६ फरवरी रविवार २०१७ ई० तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें कलकत्ते की आर्य समाजों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया । इस वर्ष महर्षि महिमा पर्व के संयोजन का दायित्व आर्यसमाज बड़ाबाजार के ऊपर था, इस अनुष्ठान को सफल करने के लिए नई दिल्ली से आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, प्रखर वक्ता, सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी आर्यवेश जी महाराज पधारे हुए थे, जिन्होंने बहुत ही सारगर्भित, समसामयिक, हृदयस्पर्शी व्याख्यान एवं प्रेरक उद्बोधन दिये । इन छः दिवसों में स्वामी आर्यवेश जी ने समाज के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की जिसमें सन्तानों की शिक्षा-दीक्षा, परिवारों में संस्कारों की आवश्यकता, आत्मिक-उन्नति, शारीरिक उन्नति, बुद्धि का विकास किस प्रकार करें आदि विषयों पर विस्तृत चर्चायें की ।

प्रथम दिवस स्वामी दयानन्द के जन्मदिन पर स्वामी दयानन्द के अवदान विषय पर ऐतिहासिक बातें बताई । उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आन्दोलन में स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज की सक्रिय एवं मुख्य भूमिका रही । अधिकतर क्रान्तिकारी चाहे नरमदल के हों अथवा गरम दल के उनके जीवन एवं विचारों में स्वामी दयानन्द की अमिट छाप दिखाई देती है । अधिकतर स्वतंत्रता नायकों ने स्वामी दयानन्द, आर्यसमाज या सत्यार्थप्रकाश से प्रेरणा लेने की बात कही है । इस प्रकार उन्होंने (स्वामी आर्यवेश) ने कहा कि कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता जो महात्मा गांधी के बहुत करीबी थे, श्री बी० पट्टाभि सीता रमैया लिखते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले या जेलों के अन्दर बन्द सेनानियों में ८५ प्रतिशत आर्यसमाज की पृष्ठ भूमि से आते थे । इस प्रकार उन्होंने (स्वामी आर्यवेश) आर्यसमाज की ऐतिहासिक गौरव की याद दिलाते हुए आर्यों को उत्साहित किया।

इसके अतिरिक्त दूसरे दिन समाजवाद पर मानवता का दृष्टिकोण क्या होना चाहिए । इस वैदिक वांङ्मय के आधार पर प्रकाश डाला । महर्षि मनु के आलोचकों को वाद-संवाद के लिए आमन्त्रित किया और कहा कि महर्षि मनु द्वारा प्रतिपादित समाज ही सच्चा समाजवाद है । प्रक्षिप्त मनुस्मृति के आधार पर, वोट बैंक की राजनीति के कारण एवं स्वार्थ सिद्धि के कारण अज्ञानी लोग आज मनु का विरोध कर रहे हैं । मनु ने तो नारी को देवता बताया है — ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'' उन्होंने शूद्र शब्द से किसी जाति विशेष का उल्लेख नहीं किया है । बल्कि योग्यता के अनुसार कर्मभेद बताया है । मनु ने तो शूद्रों को भी ब्राह्मण बनने का अधिकार प्रदान किया है । इस प्रकार उन्होंने (स्वामी आर्यवेश) ने मनु को गम्भीरता से पढ़ने एवं समझने की आवश्यकता बताई और मनु को आद्य संविधान निर्माता बताया ।

(शेष पृष्ठ २६ पर)

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५९ अंक — ०३
माघ-फाल्गुन २०७३ वि०
दयानन्दाब्द १९३
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११७
मार्च — २०१७

आद्य सम्पादक
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय
(स्मृति शेष)

सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्यप्रकाश जायसवाल
पं० योगेशराज उपाध्याय

शुल्क : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

इस अंक की प्रस्तुति

१. आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ		२
२. इस अंक की प्रस्तुति		३
३. विश्व का कल्याण (५०)	वेद-वीथिका से	४
४. स्वामी जी का स्वकथित जीवन-चरित्र	पं० लेखराम द्वारा संकलित	७
५. महर्षि दयानन्द जी और अन्य मत-मतान्तर	कामता प्रसाद मिश्र	११
६. ब्रह्मचर्य आश्रम (विद्यार्थी जीवनकाल)	आदर्श विद्यार्थी जीवन	१४
७. गुरुवर को शत् शत् नमन !	चान्दरतन दम्माणी	१७
८. सत्यार्थ प्रकाश : मेरी दृष्टि में	श्री परीक्षित मंडल 'प्रेमी'	१९
९. कल्पना करें कि यदि आज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हमारे बीच पहुँच जाये तो वह क्या कहते !	पं० उम्मेद सिंह 'विशारद'	२१
१०. अकाल मृत्यु तथा भूत-प्रेत योनि की विवेचना	खुशहाल चन्द्र आर्य	२४

आर्य समाज कलकत्ता
१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६
दूरभाष : २२४१-३४३९ *email : aryasamajkolkata@gmail.com*

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है ।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा ।

www.thearyasamaj.org

विश्व का कल्याण

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः ।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम् ।। अथर्व० १-३१-४

शब्दार्थ :-

स्वस्ति	=	कल्याण	मात्र उत पित्रे	=	माता पिता के लिए
अस्तु	=	होवे	नः	=	हमारे
गोभ्यो	=	गौओं, पशुओं के लिए	जगते	=	संसार के लिए
पुरुषेभ्यः	=	मनुष्य के लिए	विश्वं	=	संसार
सुभूतं	=	सुसम्पन्न	सुविदत्रं	=	सुमति वाला
ज्योक्	=	चिरकाल	एव	=	ही
दृशेम	=	देखें	सूर्यम्	=	सूर्य, प्रकाश

भावार्थ :-हमारे माता-पिता का कल्याण हो। हमारे पशु, पुरुष और संसार का कल्याण हो। सम्पूर्ण संसार सुसम्पन्न और सुमति से युक्त हो। हम दीर्घकाल तक सूर्य, प्रकाश, ज्ञान को देखें।

विचार विन्दु :

१. **स्वस्ति क्या है? स्वस्ति क्यों बोलते हैं ?**
२. **सर्वस्वस्ति, सर्वोदय का भाव।**
३. **विश्व की सुसम्पन्नता का क्रम।**
४. **सूर्य दर्शन, ज्ञान का, उत्थान का सोपान।**

व्याख्या

समाज में बहुत लोगों का भला (greater good of greater society) भारतीय चिन्तन नहीं है, यह पश्चिमी सभ्यता का चिन्तन है। ऋषियों का चिन्तन सम्पूर्ण विश्व का कल्याण चाहता है।

इस मन्त्र में संसार के 'स्वस्ति' की प्रार्थना की गई है। 'स्वस्ति' का अर्थ होता है—सु+अस्ति=मंगल, कल्याण, भलाई इत्यादि। मन्त्र में स्वस्ति की प्रार्थना माता-पिता से आरम्भ हुई है और सम्पूर्ण जगत् पशु-पक्षी सबके मंगल-कल्याण की प्रार्थना की गई है। भारतीय परम्परा में सदा सबकी भलाई, सबके कल्याण की बात की जाती है। हम जब भी प्रार्थना करते हैं तो बोलते हैं—

''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भाग् भवेत् ।।''

''सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान ।
सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब विध हो कल्याण ।''

www.thearyasamaj.org

भारतवर्ष के चिन्तकों ने सदा सबके कल्याण की बात सोची है । अल्पमत, बहुमत जैसे चिन्तन भारतीय सांस्कृतिक परम्परा के अनुकूल नहीं है । यहां तो विश्व मात्र के स्वस्ति की, कल्याण की भावना है ।

इस मन्त्र में सर्वप्रथम अपने माता-पिता के स्वस्ति के लिये प्रार्थना की गई है । प्रायः माता-पिता , आचार्य, बड़े-बुर्जुग बच्चों के लिये अपने पुत्र-पौत्र, शिष्य और अन्य पद में छोटों के लिये स्वस्ति का आशीर्वाद देते हैं । पर इस मन्त्र में छोटे बड़ों के लिये मंगल-कामना कर रहे हैं । वस्तुतः यह ठीक भी है । माता-पिता, बड़े-बुर्जुग जब तक काम करने लायक रहते हैं तब तक तो वे आत्म-निर्भर रहते हैं । किन्तु जब ये कार्य करने लायक नहीं रहते तो पुत्र-पुत्रियां, शिष्य आदि उनके कल्याण के लिये चेष्टा करते हैं और वे प्रार्थना करते हैं कि मेरे बड़े-बुजुर्ग, वृद्ध सदा अच्छे से रहें । भारतीय परम्परा में पितृ-यज्ञ को महायज्ञ कहा गया है। अतः इस महायज्ञ के लिये सदा तत्पर रहना धर्म है । वस्तुतः ठीक ही कहा है -

'पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्व देवताः'

जिन सन्तानों से माता-पिता प्रसन्न रहते हैं उनसे सभी देवता प्रसन्न रहते हैं ।

उपनिषद् में एक कथा आती हैं कि जब आचार्य यम ने अपने शिष्य नचिकेता से तीन वर मांगने का आग्रह किया तो नचिकेता ने प्रथम वर अपने पिता का कल्याण, निश्चिन्तता ही मांगा था । नचिकेता ने अपने गुरु आचार्य यम से वर क्या माँगा, सम्पूर्ण संसार के सम्मुख, सारे पुत्र-पुत्रियों के लिए एक आदर्श उपस्थित कर दिया कि यदि तुम्हें कभी वर मांगने का अवसर मिले तो सर्वप्रथम माता-पिता के कल्याण का ही वर मांगना । माता, पिता, आचार्य की ओर से मुंह मोड़ना महान पाप कर्म है ।

मंत्र में फिर प्रार्थना की गई है कि संसार के पशुओं और प्राणियों का कल्याण हो । मंत्र में गोभ्यः शब्द का प्रयोग हैं । यह उपलक्षण है । अर्थ है - सारे संसार के पशु-प्राणियों का कल्याण। संसार में गाय, बैल, घोड़े, भेड़, बकरी आदि सभी परम उपकारी हैं, सबका कल्याण हो ।

मंत्र में अगली प्रार्थना यह है कि सम्पूर्ण संसार के लिए, विश्व के लिए सुसम्पन्ता और सुमति प्राप्त हो । वस्तुतः सम्पन्नता तभी आती हैं जब सुमति होती हैं । व्यक्ति में सुमति हो, घर में सुमति हो और समाज में सुमति हो, तो धीरे-धीरे सारा संसार सुसम्पन्न हो जाता हैं । सुसम्पन्नता केवल धन की ही नहीं है, विचारों की भी है । विचारो की सुसम्पन्नता न हो तो धन से सम्पन्न होकर भी मनुष्य दुःखी ही होगा, उसका कल्याण नहीं होगा । अतः मंत्र में प्रार्थना यह है कि संसार की सुसम्पन्नता ज्ञान और धन दोनों से हो । वस्तुतः ठीक ही कहा है -

'जहां सुमति तहां सम्पत्ति नाना,
जहां कुमति तहां विपत्ति निधाना ।'

सुमति से, अच्छे ज्ञान से विपत्तियां भी कट जाती हैं । वास्तव में सुसम्पन्नता केवल रुपये-पैसे या धन की ही नहीं होती। सुन्दर स्वास्थ्य और सुन्दर विचार रुपये-पैसों से अधिक आवश्यक हैं । सर्व स्वस्ति या सर्वोदय या सबका कल्याण तभी होगा, जब संसार के सभी मनुष्यों, पशु-प्राणियों को भोजन, वस्त्र, आवास, औषधि शिक्षा किसी तरह की कोई कमी न हो ।

मंत्र में प्रार्थना की गई है -

'विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु'

www.thearyasamaj.org

यह प्रार्थना सम्पूर्ण विश्व के लिए है कि सम्पूर्ण विश्व अर्थात् संसार का प्रत्येक देश या राष्ट्र सुसम्पन्न हो और प्रत्येक राष्ट्र या देश सुनीति, सुज्ञान से सम्पन्न हो । यूं तो सीधे साधे ढंग से विचार करने पर यह समझ में आता है कि यदि प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक परिवार और समाज सुसम्पन्न हो जाये तो सम्पूर्ण विश्व सुसम्पन्न हो जायेगा । इसी तरह प्रत्येक व्यक्ति यदि ज्ञानी, विद्वान् हो जाये तो सम्पूर्ण विश्व ज्ञानी, विद्वान् हो जायेगा । किन्तु मंत्र की भावना किसी और गंभीर तथ्य की ओर संकेत कर रही है ।

भारतीय मनीषा में कहा गया है, 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' । जो संबंध पिण्ड अर्थात् शरीर के अंग - प्रत्यंग में उपस्थित हैं, वही संबंध ब्रह्माण्ड में भी निहित है । शरीर का प्रत्येक अंग शरीर के सभी अंगों के साथ पूर्ण रूप से सामंजस्य में रहता है और कोई अंग स्वार्थी न होकर सम्पूर्ण शरीर के हित में कार्य करता है । आंख कांटा देखती है तो पैर को सावधान कर देती है । नाक सड़े हुए, दुर्गन्धयुक्त खाद्य की गंध पाकर जिह्वा को सावधान कर देती है । पेट भोजन को पचा कर सारे शरीर को बांट देता है । यही अवस्था हृदय, मष्तिष्क प्रत्येक अंग की है । शरीर का प्रत्येक अंग सम्पूर्ण शरीर के हित, सुभूति के लिए कार्य करता है ।

मंत्र की शिक्षा यह है कि विश्व का प्रत्येक खण्ड, राष्ट्र, सम्पूर्ण विश्व के हित में जुटा रहे । किसी देश में पेट्रोल है, कहीं गैस है, कहीं कोयला है, इसे किसी एक देश का न समझकर सारे विश्व की सामूहिक, साझा सम्पत्ति समझा जाये । संकीर्ण राष्ट्रीयता ने सम्पूर्ण विश्व को बड़ी परेशानी में डाल रखा है । आज पश्चिमी ज्ञान का बोल-बाला है । आज का अर्थ-शास्त्र, पृथ्वी हो या आकाश, सबका स्वार्थी, निर्दय, सामंजस्यहीन दोहन की शिक्षा दे रहा है । वेद पृथ्वी को माता बताते हैं -

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' (अथर्व, भूमिसूक्त) -

भूमि हमारी माता है और हम भूमि की संतान हैं । ऋषि-मुनि भूमि और भूमण्डल, अन्तरिक्ष और आकाश, सबको पूज्य दृष्टि से, देवता की भूमिका में देखते और मानते थे । आज का विज्ञान, आज की शिक्षा, भूमि को भोग्या मानकर, भूमि हो या भूमण्डल, सबका निर्दय दोहन कर रहा है । कितना जल, कितना खनिज निकल रहा है, भूण्डल का कितना शोषण हो रहा है, इसका कोई विचार नहीं रह गया । यह राक्षसी ज्ञान भूमण्डल को भू-मण्डी (world market) बना रहा है । यह दुष्ट नीति राक्षसी नीति है । मंत्र सुनीति की शिक्षा दे रहा है ।

मंत्र में अन्तिम प्रार्थना यह हैं कि हम चिर-काल तक उगते हुए सूर्य को देखा करें । इस छोटी-सी प्रार्थना में बहुत बातें आ जाती हैं । सूर्य-दर्शन हमें कई सन्देश देता हैं । सूर्य अन्धकार का नाश करके प्रकाश देता हैं । अन्धकार अज्ञान का और प्रकाश ज्ञान का प्रतीक हैं । भाव यह हुआ कि हम दीर्घकाल तक ज्ञान के आलोक से आलोकित होते रहें । सूर्य आकर्षण का केन्द्र होता है। सौर-मण्डल के सभी ग्रह-उपग्रह उसके आकर्षण से बंधे रहते हैं । हम भी अपने व्यक्तित्व का ऐसा विकास करें कि हम भी अपनी मण्डली में आकर्षण के केन्द्र बने रहें । सूर्य अपने नियमों में सदा एक रस होकर चलता हैं । कभी अपने नियमों का उल्लंघन नहीं करता । जहां सूर्य का प्रकाश होगा वहां कोई चीज सड़ती नहीं हैं और सड़ती वस्तुओं को सूर्य का ताप जलाकर समाप्त कर देता हैं । हमें भी सन्देश मिलता है कि हम सूर्य की तरह अपने आस-पास की सड़ान्ध को नष्ट कर दें । अन्ततः सूर्य की भांति हम ज्ञान के आलोक और आकर्षण से सम्पन्न रहें ।

●

www.thearyasamaj.org

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन वृत्त

अध्याय–१

लश्कर-ग्वालियर के समाचार

(२४ जनवरी सन् १८६५ से ७ मई १८६५ तक)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी को गुजरात में संवत १८८१ में हुआ था। पूरे भारतवर्ष में स्वामी जी का जन्म दिवस मनाया जाता है इसी अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता ने निर्णय किया कि पं० लेखराम द्वारा संकलित एवं आर्य महामहोपदेशक कविराज श्री रघुनन्दन सिंह निर्मल द्वारा अनूदित महर्षि स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र धारावाहिक प्रकाशित किया जाय, इसी शृंखला में प्रस्तुत है यह धारावाहिक जीवन-चरित्र — सम्पादक

(गतांक से आगे)

महाराजा ग्वालियर की ओर से भागवत सप्ताह की तैयारी — पण्डित **गंगाप्रसाद शुक्ल** तथा **जमना प्रसाद शुक्ल**, ग्वालियर निवासी ने वर्णन किया कि तारीख २ नवम्बर सन् १८६४ तदनुसार कार्तिक सुदि तीन, संवत् १९२१ शुक्रवार को श्रीमान् महाराजा जियाजी राव सिन्धिया आलीजाह बहादुर के दरबार में (देवकी झाँकी ?) सर्व सरदार मंडली और गोविन्द बाबा और नाना ज्योतिषी को बुलाया गया। श्रीमद् भागवत सप्ताह का मुहूर्त पूछा गया। बुद्धिमान् और माननीय और योग्य ज्योतिषियों ने मीनमेख विचार और अश्विनी-भरणी की गणना करके माघ शुदि नवमी, शनिवार (२५ माघ संक्रान्त) तदनुसार ४ फरवरी, सन् १८६५ का मुहूर्त निकाला कि इस शुभदिवस में कथा का आरम्भ किया जाय। इस शुभ मुहूर्त की सभी देश देशान्तरों में तार द्वारा योग्य पण्डितों को सूचना दी गई। लश्कर से कुछ रईस भी भेजे गये। काशी, पूना, सितारा, अहमदाबाद, हैदराबाद, नासिक आदि से ऐसे पंडित बुलाये गये कि खड़े होकर हरिकथा कहें। दूर-दूर से लोग आने प्रारम्भ हो गये और इधर महाराजा साहब की ओर से बड़ी धूमधाम से तैयारियाँ होने लगीं। अतिथि सत्कार करने में कोई कमी शेष नहीं छोड़ी गई। आये लोगों का स्वागत बड़े मान-सम्मान से आदर सत्कार पूर्वक होने लगा। चार सौ भागवती पंडित चुने गये फिर उनमें से भी ३७२ स्थित बने रहे। तीन स्थानों की तैयारी की आज्ञा हुई। पहला मण्डप श्रीकृष्ण जी की झाँकी का बड़ी तैयारी के साथ सुसज्जित किया गया। दूसरा मण्डप जहाँ कथा बैठेगी, शिविर के मध्य बड़े दलानों में सौ पाट बिछाये गये। रंग बिरंगे फूलों के बन्दनवार लगाये गये। तीसरा मंडप कोठी के बाहर बहुत अच्छी प्रकार से सुसज्जित किया

www.thearyasamaj.org

गया । ये तीनों मंडप वास्तव में दर्शनीय बने थे । बाहर से प्रसिद्ध कथावाचक आये, उनको लिवा लाने के लिए रथ और पहरे गये थे । महाराज जियाजी राव ने स्वयं उनका स्वागत किया और उनको रथ में बिठाकर लाये । मिती २४ जनवरी, सन् १८६५, मंगलवार, तदनुसार माघ बदि द्वादशी को महाराज ने २५ अशर्फी अभय महाराज को रामनवमी की भिक्षा में दीं । उसी दिन गोविन्द बाबा काशी वाले को पालकी, सोने की छड़ी, अब्दागिरी चंवरी व छतरी व बग्घी दान कीं ।

भागवत कथा के अनिष्ट फल

स्वामी जी आबू पर्वत से ग्वालियर पधारे, धारा प्रवाह संस्कृत में सम्भाषण और भागवत का खण्डन और भागवत की कथा से अमगल की भविष्यवाणी—और उसी दिन अर्थात् २४ जनवरी सन् १८६५ को श्रीमान् स्वामी दयानन्द महाराज ने आबू पर्वत से आगमन किया,[१] चार विद्यार्थी साथ थे। आप रामकुई पर विराजमान हुए और बापू आपाड़ जरनैल के गंगा मन्दिर में ठहरे । इनके पधारने की सूचना लश्कर में पहुँच गई । बहुत लोग और विशेषतया पंडित लोग उनके दर्शनों के निमित्त आने लगे। जो पंडित लोग जाते सब आपका सिंहनादवत् धाराप्रवाह संस्कृत भाषण सुनकर चुप हो जाते थे । हम दोनों भाई भी दर्शन को जाया करते थे । जब स्वामी जी ने सुना कि यहाँ कथा, बड़ी तैयारी के साथ होने वाली है तब आप भागवत का खंडन करने लगे ।

स्वामी जी ने गंगाप्रसाद दफेदार को बुलाया कि सीताराम शास्त्री के पास जाओ और शिवप्रताप वैश्य को साथ ले जाओ । बड़े-बड़े षट्शास्त्रियों को बुला लाओ, हम उनके दर्शन करना चाहते हैं और इसी ध्येय से आये हैं कि कुछ उनसे विचार करेंगे । यदि वे यहां न आवें तो हमको बुला लें, हम आवेंगे। दफेदार गंगाप्रसाद, सीताराम शास्त्री और शिवप्रताप के साथ बापू शास्त्री चौधरी के पास गये और (स्वामी जी द्वारा किये गये) श्रीमद् भागवत् के खंडन का वर्णन किया और (बताया कि) कहते हैं कि बड़ा विघ्न लश्कर में होगा । सीताराम शास्त्री बापू शास्त्री के साथ गाड़ी में बैठकर महाराजा के पास गये और निवेदन किया कि एक स्वामी महाविद्वान् पूर्ण ब्रह्मचर्य धारण किये हुए भागवत का खंडन करते हैं और ऐसा कहते हैं कि लश्कर में बड़ा विघ्न होने वाला है । महाराजा ने विष्णुदीक्षित पंडित को भेजा । वह रामकुई पर स्वामी जी को प्रणाम करके जा बैठे और कहा कि महाराज ! आपका आगमन सुनकर महाराजा ने भेजा है और श्रीमद् भागवत् सप्ताह का माहात्म्य पूछा है । स्वामी जी हँसने लगे और कहा कि दुःख उठाने और क्लेश के अतिरिक्त कोई फल नहीं है—चाहो तो करके देख लो । विष्णुदीक्षित सुनकर चुप हो गये और प्रणाम करके चल पड़े और जाकर शिविर में महाराजा से और

१. धौलपुर में १५ दिन रहकर स्वामी जी ग्वालियर को चल पड़े । परन्तु आगे लिखा है कि २४ जनवरी, सन् १८६५ को स्वामी जी आबू पर्वत से ग्वालियर पधारे । स्पष्ट है कि स्वामी जी धौलपुर में १५ दिन रहकर लगभग ३० अक्तूबर को वहां से चले और ग्वालियर होते हुए किसी मार्ग से आबू पर्वत चले गये । वहाँ से वे अर्थात् धौलपुर से चलने के बाद लगभग ८५ दिन पश्चात् २४ जनवरी सन् १८६५ को लश्कर पहुँचे । उसी दिन ग्वालियर के महाराजा ने अभय महाराज तथा गोविन्द बाबा को दान दिया था । इस प्रकार धौलपुर से चलकर लगभग २ महीने और २३ दिन पश्चात् ग्वालियर में पहुँचे । इस बीच में वे सम्भवतः अपने योगविद्या सिखाने वाले गुरुओं से भेंट करने आबू पर्वत गये होंगे । इसीलिए यहाँ आबू पर्वत से पधारना उचित प्रतीत होता है । (सम्पादक)

www.thearyasamaj.org

गोविन्द बाबा से सब वृतांत कह दिया । महाराजा हँसने लगे और बोले कि आप बड़े समर्थ हैं जो चाहे सो कहें । हम सब प्रबन्ध कर चुके, बड़ी-बड़ी दूर से बड़े-बड़े विद्वान् पंडित आ गये—अब कैसे हो सकता है कि न करें । गोविन्द बाबा ने महाराजा से कहा कि ऐसे समय ऐसे महात्मा का आना हुआ है । उन्हें यज्ञ में बुलाना चाहिए ।

भागवत कथा के स्थान पर गायत्री पाठ (पुरश्चरण) कराने का सुझाव – स्वामी जी ने उत्तर में नाथू पांडे के द्वारा कहला भेजा कि गायत्री का पुरश्चरण होना चाहिए । महाराजा ने कहा कि बड़े-बड़े विद्वान् आ गये, कथा की तैयारी हो गई अब कैसे हो सकता है ।

पहले ही दिन की कथा के समय अनिष्ट – मिति ४ फरवरी, सन् १८६५ शनिवार तदनुसार माघ शुदि नवमी, संवत् १९२१ विक्रमी को पाँच बजे दिन को कथा बैठी, एक सौ आठ बाँचने वाले, एक सौ आठ सुनने वाले, शेष रिसाला पल्टन । तोपखानों में कथा सुनाने और जप करने वाले बिठाये गये, बाजा बजा, तोप की सलामी हुई । १२ बजे दिन के कथा का विसर्जन हुआ, तीन बजे तक खानपान रहा । तीन बजे गोंदा बाबा जी की कथा आरम्भ हुई । समस्त छोटे बड़े जागीरदार और सरदार श्रीमन्महाराजा के साथ बैठे, रात के ९ बजे कथा समाप्त हुई । महाराजा को बड़ी प्रसन्नता हुई परन्तु उसी रात को श्री महारानी जी का पाँच महीने का गर्भ गिर गया और स्राव शुरू हो गया, जिसके कारण कथा में आना न हो सका । इससे महाराजा को दुःख हुआ ।

दूसरे दिन भी अनिष्ट – ५ फरवरी, सन् १८६५ रविवार तदनुसार माघ शुदि दशमी को रहमतपुर के हरिबाबा की कथा हुई । उसी दिन रावजी शास्त्री के घर में मृत्यु हो गई जिससे वह कथा से उठकर चले गये ।

तीसरे दिन भी दुर्घटना – ६ फरवरी, सन् १८६५ सोमवार, माघ शुदि एकादशी को गोविन्द बाबा की कथा हुई । उसी समय ठीक कोठी मंडप के सामने किसी ने सांड (बैल) को तलवार मारी, बड़ा कोलाहल हुआ, मारने वाला भाग गया । महाराजा ने दस रुपये सांड को भोजन देने के लिए देने की आज्ञा दी और जख्म पर टांका लगवाने का आदेश दिया । उस दिन कथा की बड़ी धूम रही—गोविन्द बाबा को दो लाख रुपये दिये गये ।

७ फरवरी, सन् १८६५ मंगलवार, तदनुसार माघ शुदि द्वादशी, संवत् १९२१ को त्रयम्बक बाबा की कथा हुई । बड़ा आनन्द हुआ महाराजा उन्हें पांच सहस्र रुपया देते थे परन्तु उन्होंने न लिये ।

८ फरवरी, सन् १८६५ बुधवार, माघ शुदि १३ को धौली बाबा की कथा हुई । महाराजा परम प्रसन्न हुए । दो बजे रात तक होती रही ।

९ फरवरी, सन् १८६५ वीरवार को बुधकर बाबा की कथा हुई — बड़ी प्रसन्नता रही ।

१० फरवरी, सन् १८६५ शुक्रवार पूर्णमासी के दिन कथा अभय महाराज की हुई जो बहुत मन लुभाने वाली थी । महाराजा ने प्रसन्न होकर तामझाम बैठने को और पाँच हजार रुपया दक्षिणा और दस रुपये प्रतिदिन भोजन को कर दिये ।

११ फरवरी, शनिवार तदनुसार बदि प्रथमा सबको विदा करने का दिन था । प्रथम सबको विदा करके हाथियों पर बिठला कर शिविर में शोभा यात्रा निकाली गई । जब सब लौट कर शिविर में आये

www.thearyasamaj.org

तो श्रीमन्ममहाराजा ने अहसानअली हकीम को कहा कि श्रीमान् छोटे महाराजा को लाओ । पण्डित राजनारायण डाक्टर (छोटे महाराजा को) अपने साथ बग्घी में लाये । महाराजा ने छोटे महाराजा को सब ब्राह्मणों के चरणों में डाला और गोविन्द बाबा की गोद में दिया । उस दिन बड़ी प्रसन्नता होती रही, सबने उन्हें आशीर्वाद दिया कि ''सौ वर्ष पर्यन्त सुखपूर्वक जीवित रहो ।'' आशीर्वाद लेकर छोटे महाराजा बाड़े के पिछाड़ी आये । उनके ऊपर निछावर उतारी गयी । पण्डित लोग बहुत सा धन देकर विदा किये गये ।

कथा के १० दिन पश्चात् नगर में हैजे का प्रकोप – मिति २१ फरवरी, सन् १८६५ मंगलवार तदनुसार फाल्गुण बदि दशमी, संवत् १९२१ को कोतवाल ने रिपोर्ट की कि नगर में विचित्र प्रकार की गर्मी पड़ती है, लोग बुरी दशा को प्राप्त होते जाते हैं और बहुत से मनुष्य मर रहे हैं ।

२५ मार्च सन् १८६५ शनिवार तदनुसार चैत बदि १३ को कोतवाल ने रिपोर्ट की कि विशूचिका का नगर में बहुत जोर है, बड़ी घबराहट मची हुई है ।

अप्रैल में छोटे महाराजा की हैजे से मृत्यु – वैशाख शुदि ५, संवत् १९२२ तदनुसार ३० अप्रैल सन् १८६५ रविवार को रात के १२ बजे श्रीमान् छोटे महाराज को विशूचिका हुई—जिससे वह देवलोक को पधारे । इस मृत्यु से श्री महाराजा और समस्त लश्कर वालों को बड़ा दुःख हुआ । इधर लश्कर में मरी पड़ रही थी—नित्य शवों को उस मार्ग से आना जाना और रामकुई पर स्नानार्थ स्त्री पुरुषों का समूह और रोना पीटना हाय हाय मची देखकर श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज वहां से उठकर बाबा साहब के बाग की बारहदरी में आन विराजमान हुए, उधर श्रीमान् महाराजा के प्रति शोकप्रदर्शन करने को बड़े-बड़े राजा रईस आने लगे ।

शास्त्रार्थ के लिए निरन्तर लिखते रहे, पर कोई नहीं आया—वैशाख शुदि १२, संवत् १९२२ तदनुसार ७ मई, सन् १८६५ रविवार के दिन तक बड़े हर्ष के साथ बाबा साहब के बाग में रहे और उस दिन तक शास्त्रार्थ के लिए विज्ञापन लिखकर भेजते रहे । किसी ने शास्त्रार्थ न किया । इन पंडितों से भेंट करने की आपको बड़ी अभिलाषा रही । राणाचार्य, गोपालाचार्य, धन्वन्ताचार्य, सुनकर नासिक चले गये और नाना पौराणिक ढोंड शास्त्री, राव जी शास्त्री—इनको कई बार बुलाया, परन्तु (स्वामी जी के पास) न गये । हम दोनों भाई उनकी सेवा में रहते थे । चलते समय हमें आशीर्वाद दिया और यहाँ से करौली को चले गये । उनके आशीर्वाद तथा ईश्वर की कृपा से उसी वर्ष मुझे गंगाप्रसाद के घर पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम सूरजप्रसाद रखा गया । उनके चले जाने से हम लोगों को उनके वियोग से बड़ा दुःख हुआ ।

करौली में कई मास रहकर जयपुर को प्रस्थान – ग्वालियर से स्वामी जी करौली में पधारे और राजा साहब से धर्मविषय पर वार्तालाप होता रहा और पण्डितों से भी कुछ शास्त्रार्थ हुए और यहाँ पर कई मास ठहर कर वेदों का उन्होंने पुनः अभ्यास किया—फिर वहाँ से जयपुर चले गये ।

क्रमशः.....

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द जी और अन्य मत-मतान्तर

– कामता प्रसाद मिश्र

वेदोद्धारक, युगद्रष्टा तथा महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब समाज अनेक कुरीतियों, बुराइयों तथा विकृतियों से जूझ रहा था । समाज में अंधविश्वास, छुआछूत, ऊँच-नीच के भेदभाव, अशिक्षा, अज्ञानता जैसी बुराइयाँ समाज को खोखला बना रही थीं । वहीं धार्मिक क्षेत्र में पाखण्ड, आडम्बर, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, चेला चेली मूड़ना, मठों की स्थापना कर असत्य को सत्य, अज्ञान को ज्ञान, अपने को ईश्वर का अवतार बताना, तो कुछ लोग ईश्वर का भेजा दूत अपने को सिद्ध करने में लगे हुए थे । दूसरी ओर भारत अंग्रेजी शासन की क्रूर, निर्मम अत्याचार, अन्याय, उत्पीड़न देशभक्त निर्दोषों को कठोर दण्ड या कारावास देने की घोर पराधीनता का शिकार हो गया था । आर्थिक रूप से भारतीय समाज निर्धनता, गरीबी, भुखमरी तथा विपन्नता का भयंकर असहनीय दुःख भोग रहा था । ऐसे समय में महर्षि दयानन्द जी ने देश की इन समस्याओं को निकट से देखा, भलीभाँति समझा तथा गहन अध्ययन किया । उनकी आत्मा तथा मस्तिष्क को भारी आघात लगा । उन्होंने इन सम्पूर्ण समस्याओं को भारत से समूल नष्ट करने का संकल्प लिया । स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने वैदिक सिद्धान्तों, मान्यताओं तथा विचारों के आधार पर भारत को एक सम्पन्न, शिक्षित, वैदिक, वैज्ञानिक एवं शक्ति सम्पन्न स्वस्थ राष्ट्र निर्माण करने का व्रत लिया। वह जानते थे कि भारतवर्ष जब तक पराधीनता के भीषण कुचक्र से मुक्त होकर स्वराज्य प्राप्त नहीं करता तब तक इसका, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक उद्धार नहीं हो सकता । महर्षि ने पराधीनता को इसीलिए नरक तथा स्वतंत्रता को स्वर्ग बताया ।

महर्षि दयानन्द जी ने सम्पूर्ण अवैदिक सिद्धान्तों, मान्यताओं तथा विचारों को भारतीय समाज के लिए अभिशाप बताया । उन्होंने नारा दिया ''वेद की ओर लौटो'' तभी सर्वांगीण उन्नति सम्भव है । तभी हम ईसाइयों तथा इस्लाम के धर्मांतरण जैसे षडयंत्र को असफल कर सकेंगे । उन्होंने ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम'' वेद सन्देश को आधार बनाकर विश्व के सम्पूर्ण मानव को श्रेष्ठ सदाचारी, विद्वान् तथा मनीषी बनने की प्रेरणा दी । महर्षि महान क्रांतिकारी विचारक, दार्शनिक तथा राष्ट्रभक्त थे, इसी कारण उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्ति की ज्वाला जलाया जिससे उनके समाज सुधार, धार्मिक तथा दार्शनिक विचारों से समग्र क्षेत्रों में फैली विकृतियाँ भस्मीभूत होती चली गईं । महर्षि ने यह सिद्ध कर दिखाया कि वैदिक धर्म ही सत्य सिद्धान्तों पर आधारित है । वैदिक धर्म ही विश्व का सबसे प्राचीनतम धर्म है, इसी से ही अन्य मत-मतान्तरों के निर्माताओं ने सत्य विचारों को अपने मत में सम्मिलित किया है । विश्व के इतिहास अवलोकन से ज्ञात होता है कि महाभारतकाल तक केवल एक ही धर्म था और वह था 'वैदिक धर्म ।'

महर्षि दयानन्द जी ने वेदों का भाष्य प्राचीन ऋषियों यास्काचार्य आदि को आधार मान कर वैज्ञानिक एवं युक्ति संगत भाष्य किया । वेद के गौरव को विश्व पटल पर पुनः प्रतिष्ठित किया । वेदों के विषय में फैली भ्राँतियों को समूल नष्ट किया । वेदों को जहाँ पाश्चात्य वेदभाष्यकार गड़रियों का

www.thearyasamaj.org

गीत बताते वहीं भारतीय वेद भाष्यकार कर्मकाण्ड और जादू-टोना का ग्रंथ कहते थे । महर्षि ने सभी प्रकार का भ्रमोंच्छेदन कर निरुक्त तथा निघण्टु के आधार पर वेद का वैज्ञानिक तथा तर्कपूर्ण भाष्य करके सिद्ध कर दिया कि वेद ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है । उन्होंने घोषणा किया कि ऐ संसार के लोगों ! यदि तुम अपने जीवन को सुखी और शान्तिमय बनाना चाहते हो तो केवल वेदों को अपनाओं क्योंकि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है । अन्य मतमतान्तरों की साम्प्रदायिक पुस्तकें स्वार्थी लोगों ने बनाया है, वे ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकती । आज संसार में जितने भी मतमतान्तर हैं वह महाभारत काल के पश्चात् जन्मे और फैले । विश्व के जाने माने विद्वानों ने यह स्वीकार कर लिया है कि 'ऋग्वेदादि' ही सबसे प्राचीनतम ग्रंथ हैं । यह स्वतः सिद्ध है कि वैदिक धर्म तथा वेदज्ञान पृथ्वी पर सृष्टि के आरम्भ से हैं ।

वैदिक धर्म के पश्चात् जो मतमतान्तर पैदा हुए अब हम उनका मुख्य-मुख्य मतों का संक्षेप में, कि कौन मत कब चला किसने चलाया और, क्यों चला पर प्रकाश डालते हैं ।

सर्वप्रथम हम 'पारसी मत' को देखते हैं, इस मत को चले लगभग साढ़े चार हजार वर्ष हुए, इस मत के संस्थापक श्री जरथुस्त्र महोदय थे जिन्होंने 'जिन्दावेश्ता' नामक धर्म ग्रंथ की रचना किया ।

महाभारत काल के पश्चात् दूसरा यहूदी मत चला जिसे चले लगभग चार हजार वर्ष हुए 'हजरत इब्राहिम' जिनकी कथा बाईबिल में दी गई है, इस मत के संस्थापक हुए । परन्तु उनकी विचारधाराओं को लेकर 'हजरत मूसा' ने यहूदी मत को विस्तार दिया, बाईबिल की पुरानी पुस्तक ही उनका धर्म ग्रंथ है ।

लगभग ढाई हजार वर्ष हुए बौद्धमत तथा जैनमत चला । इसके संस्थापक क्रमशः महात्माबुद्ध तथा महावीर स्वामी थे । इसमत के प्रसिद्ध ग्रंथ 'धम्मपद' तथा 'जातक' नाम से जाने जाते हैं । यह अनीश्वरवादी मत है । 'कन्फ्यूशियस' तथा 'ताओ' मत भी इन्हीं मतों के समकालीन है ।

लगभग दो हजार वर्ष हुए ईसाई मत का प्रादुर्भाव हुआ इस मत के चलाने वाले ईसामसीह थे। इनका धर्मग्रंथ बाईबिल नाम से प्रसिद्ध है । हजरत ईसामसीह फिलिस्तीन नामक देश में जेरुसलम नगर में उत्पन्न हुए थे । इसीलिए जेरुसलम ईसाईयों का धर्म स्थान या तीर्थ कहा जाता है । ईस्वी सन् जो आज प्रचलित है उन्हीं के नाम पर उनके समर्थकों ने चलाया । आज से लगभग साढ़े चौदह सौ वर्ष हुए इस्लाम मत की स्थापना हजरत मोहम्मद साहब ने किया । उनका जन्म अरब देश में हुआ और अरब में ही इस मत की स्थापना कर अरबी भाषा में ''कुरान शरीफ'' नामक धर्मग्रंथ की रचना किया। जो आज भी इस्लाम मतावलम्बियों का पवित्र धर्मग्रंथ है ।

लगभग पाँच सौ वर्ष व्यतीत हुए गुरु नानक देव ने सिक्खमत की स्थापना किया । यह मत यद्यपि वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) के रक्षार्थ स्थापित किया गया क्योंकि हिन्दू धर्म पर चारो तरफ से हमले हो रहे थे । परन्तु आज सिक्ख मत भी साम्प्रदायिक मत का रूप धारण कर लिया है । इस मत का गुरुग्रंथ साहब धर्म ग्रंथ बन गया । जिसमें कबीर, गुरुनानक, आदि संतो के भजन संग्रहीत है ।

उपर्युक्त मतों के पश्चात् और भी अनेक मत मतान्तरों का जन्म होता जा रहा है जो अवैदिक विचारधाराओं को अपने स्वार्थ और ख्याति में जन्म देते जा रहे हैं । जैसे — पौराणिकमत, ब्रह्मसमाज, प्रार्थना-समाज, राधास्वामी मत, देव समाज, मुनिसमाज, हंसामत, ब्रह्मकुमारी मत, गायत्री परिवार

www.thearyasamaj.org

आसाराम मत, राम पाल, निर्मल बाबा जैसे आदि आदि मत मतान्तर कुकुरमुत्ते के समान फैलते जा रहे हैं । इन मतों के चले दो सौ वर्ष के अन्दर ही हुए हैं । जो पूर्ण रूपेण वेद विरुद्ध हैं तथा तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं उतरते । यह समाज में अंध विश्वास, पाखण्ड, आडम्बर तथा अज्ञानता फैला कर मानव समाज को अज्ञानता के अंधकार में ढकेल रहे हैं । समाज के लोगों का शोषण करना तथा अंधविश्वास फैलाना ही इनका प्रमुख कार्य है ।

वैदिक धर्म सृष्टि के आरम्भ से ही चला आ रहा है । उसे एक अरब छियान्बे करोड़ आठ लाख तिरपन हजार एक सौ सौलह वर्ष व्यतीत हो गये हैं । वैदिक धर्म इन मतमतान्तरों से सबसे प्राचीन है जो वैज्ञानिक, युक्तिसंगत, बुद्धिसंगत तथा मानवता का पूर्ण रूपेण कल्याण करने वाला है । वैदिक धर्म के धर्म ग्रंथ वेद हैं जो ईश्वर की वाणी है, ईश्वर नित्य है उसकी वाणी वेद भी नित्य है । वेद ज्ञान परमेश्वर का आदेश, उपदेश तथा संदेश है, वेद सम्पूर्ण विश्व के मानव के लिए है, उसे सभी को पढ़ने का अधिकार है । वेद ज्ञान ही आजके जीवन और जगत को विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व एवं मानवता की शिक्षा तथा प्रेरणा दे सकते हैं । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने घोषणा किया कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है । इस सत्य को स्थापित करने के कारण महर्षि सदा-सदा के लिए अमर रहेंगे ।

महर्षि की दृष्टि दूरगामी थी । उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए 'आर्य समाज' की स्थापना किया कि आर्यसमाज संस्था वेद एवं वेदानुकूल सिद्धान्तों तथा मान्यताओं का प्रचार प्रसार करे तथा अवैदिक एवं अवैज्ञानिक सिद्धान्तों, विचारों तथा मान्यताओं को जड़ से उखाड़ फेंके । महर्षि ने सत्यासत्य के बोध कराने के लिए **''सत्यार्थ प्रकाश''** तथा वेदों के यथार्थ स्वरूप को जानने तथा समझने के लिए – **''ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका''** ग्रंथों की रचना की । जो वेद के गंभीर वैज्ञानिक एवं दार्शनिक रहस्य उलझे हुए थे उक्त ग्रंथों के अध्ययन से सब का सरलता से समाधान होता है । वेद काल से जिसे हम भारत कहते हैं इसका नाम एवं पहचान **''आर्यावर्त''** नाम से था । यहाँ के निवासी आर्य तथा उनकी भाषा आर्य भाषा थी । जिसे हम देववाणी या गीर्वाणवाणी कहते हैं, वह आर्यावर्त की सर्वसाधारण लोगों की भाषा थी ।

वैदिक धर्म सब मतमतान्तरों का आदि स्रोत है । जो भी अच्छाइयाँ सब मत-मतान्तरों में पाई जाती है वे सब वैदिक धर्म से ही गृहीत है । पारसी मत में अग्निपूजन, गौभक्ति और पवित्र सूत्र धारण की प्रथा वैदिक धर्म से लिया गया है । यहूदी मत की जो भी अच्छी विचारधाराएँ हैं वे वैदिक धर्म की ही हैं । जैनों के अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह शौच, संतोष, तप और स्वाध्याय ये नौ सिद्धान्त वैदिक धर्म से ही लिए गये हैं । बौद्धों का पंचशील सिद्धान्त वैदिक धर्म की देन है । ईसाई मत के कई सिद्धान्त बौद्धो से लिए गये हैं । इस्लाम का एकेश्वरवाद तो वैदिक धर्म की ही देन है । निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सभी मत वैदिक धर्म के आंशिक सिद्धान्तों पर आधारित हैं ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्पष्ट रूप से घोषणा किया कि वैदिक धर्म सृष्टि क्रम के अनुकूल है । यह चमत्कार तथा जगत मिथ्या में विश्वास नहीं करता । वेद सम्पूर्ण मानवमात्र के लिए हैं तथा वेदों में जो शिक्षा दी गई है वह सार्वकालिक, सार्वदेशिक तथा सार्वत्रिक है । वह देश और काल से

(शेष पृष्ठ १६ पर)

www.thearyasamaj.org

ब्रह्मचर्य आश्रम (विद्यार्थी जीवनकाल)

हमारे विद्वान् पूर्वजों, मनीषियों ने जीवन को उन्नत और उत्कृष्ट बनाने के लिए इसे चार भागों में विभाजित किया है । ऐसा कहते हुए मनुष्य के जीवन की आयु १०० वर्ष मानी है । इसमें प्रथम २५ वर्ष की आयु को ब्रह्मचर्य आश्रम का नाम दिया है, जो विद्याध्ययन के लिए है । इसके पश्चात् पच्चीस पच्चीस वर्ष के तीन आश्रम क्रमशः गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के नाम से जाने जाते हैं । यहाँ पर हमारी चर्चा का विषय ब्रह्मचर्य आश्रम ही है ।

स्वाभाविक ज्ञान –

इस सृष्टि में जो पशुपक्षी, कीट-पतंगे तथा अन्य मानवेतर योनियाँ हैं उनका काम जीवन भर उस स्वाभाविक ज्ञान से चल जाता है जो उन्हें जन्म के साथ प्रभुप्रदत्त मिला हुआ होता है । पक्षियों के बच्चों को उड़ना कोई नहीं सिखाता, गाय, बैल, भैंस को कोई तैरना नहीं सिखाता, भेड़-बकरी, साँप-बिच्छू को कोई चलना नहीं सिखाता । इन्हें यह सब कुछ अपने स्वाभाविक ज्ञान से आ जाता है । किसी पाठशाला, स्कूल या प्रशिक्षण केन्द्र में जाने की इन्हें आवश्यकता नहीं पड़ती ।

नैमित्तिक ज्ञान –

परन्तु मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान बहुत अल्प होता है । बालक जब दस ग्यारह महीने का हो जाता है तो उसे चलना सिखाना पड़ता है । चार पांच महीने के प्रयास से उसे चलना आ जाता है । फिर उसे बोलना सिखाया जाता है । बिना सिखाये उसे चलना, बोलना, तैरना, पढ़ना, लिखना आदि कुछ नहीं आएगा । पाठशाला, स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय, प्रशिक्षण संस्थान—ये सब मनुष्य जाति को नैमित्तिक ज्ञान देने के लिए ही बने हैं । स्वाभाविक ज्ञान से मानव जाति का काम चलने वाला नहीं है। जिस प्रकार डॉक्टरी की पढ़ाई किए बिना डॉक्टर नहीं बना जा सकता, इंजीनियरी की पढ़ाई किए बिना इंजीनियरी का ज्ञान नहीं हो पाता उसी प्रकार सत्य, न्याय, सदाचार, सुशीलता (नैतिकता) का पाठ पढ़े बिना अच्छा इन्सान नहीं बना जा सकता । नैतिकता का पाठ भी उतना ही अनिवार्य है जितना अन्य अकादमिक विषयों का है । नैतिकता की बातें आकादमिक विषयों—गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि की पढ़ाई में बाधक नहीं हैं, बल्कि पूरक हैं ।

नैतिक ज्ञान –

वास्तविकता यह है कि नैतिक तत्वों के अभाव में शैक्षिक ज्ञान में अधूरापन और खोखलापन बना रहेगा । मनुष्यता के लिए अपेक्षित गुणों का उल्लेख नीतिकार ने इस प्रकार किया है —

येषाम् न विद्या न तपो न दानम्
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ।।

मनुष्य कहलाने के लिए यहाँ पर केवल विद्या को ही पर्याप्त नहीं माना है । **विद्या के साथ तप, ज्ञान, दान, सुशीलता, सद्गुण और धर्म को भी उतना ही आवश्यक माना है ।** यह स्पष्ट घोषित

www.thearyasamaj.org

किया गया है कि जिसके पास विद्या, तप, दान, ज्ञान, सुशीलता, सद्गुण और धर्म नहीं है, वह इस संसार में भारस्वरूप है तथा मनुष्य के रूप में पशुवत् ही है । वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत मात्र विद्या ही प्रदान की जा रही है । यह विडम्बना है ।

तप –

ऊपर के श्लोक में तप शब्द आया है । इसके अर्थ के विषय में कुछ लोगों के मन में भ्रांतियाँ हैं । तप का अर्थ शरीर को किसी प्रकार का अनावश्यक कष्ट देना या अग्नि के निकट बैठकर तपाना नहीं है । तप क्या है –

ऋतं तपः सत्यं तपो दमस्तपः स्वाध्यायस्तपः।। तैत्तरीय०।। इत्यादि तप कहाता है । अर्थात् (ऋतं तपः) यथार्थ शुद्ध भाव, सत्य, मानना, सत्य बोलना, सत्य करना, मन को अधर्म में न जाने देना, बाह्य इन्द्रियों को अन्यायाचरणों में जाने से रोकना अर्थात् शरीर, इन्द्रिय और मन से शुभ कर्मो का आचरण करना, वेदादि सत्य विद्याओं को पढ़ना-पढ़ाना, वेदानुसार आचरण करना आदि उत्तम धर्मयुक्त कर्मो का नाम तप है । **धातु को तपा के चमड़ी को जलाना तप नहीं कहाता ।**

धर्म –

उपर्युक्त श्लोक में 'धर्म शब्द भी आया है । यहाँ धर्म से अभिप्राय ईसाईयत, इस्लाम, पारसी, सिख, हिन्दू आदि विचारधाराओं से नहीं है । ये तो मजहब, मत-मतान्तर हैं । धर्म से आशय उन उच्च मानवीय गुणों को धारण करने से है जो सम्पूर्ण मानव समाज के लिए समान रूप से उपयोगी हैं और सृष्टि के आरम्भ से विद्यमान हैं । इन मानवीय गुणों का विशेष उल्लेख परमेश्वर की कल्याणी वाणी वेद में है । जैसे सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, वायु, जल, अन्न, वनस्पति आदि वस्तुएँ समूची मानवजाति के उपयोग के लिए हैं वैसे ही वेद (ज्ञान) भी सारी मानव जाति के लिए है । इसी के आधार पर ऋषियों ने धर्म का यथार्थ स्वरूप बहुत सरलता से बताया है –

– सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचारकर करने चाहिए ।

– सदाचार ही धर्म है । **(आचारः परमो धर्मः)** मनुस्मृति ।

– **यतो अभ्युदय निश्रेयशः सिद्धि स धर्मः।** अर्थात् जिन कार्यों के करने से लोक-परलोक दोनों सुधरते हैं । वही धर्म है ।

– **श्रूयताम् धर्मसर्वस्वं श्रुत्वाचावधार्यताम् ।**

आत्मनि प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत ।। महाभारत यदि जानना चाहते हो कि धर्म क्या है तो सुनो और सुनकर उसे हृदय से स्वीकार करो । दूसरों का जो व्यवहार-बर्ताव आपको अपने प्रति अप्रिय (बुरा) लगता है, वैसा व्यवहार दूसरों के प्रति मत करो । यही धर्म है ।

धर्म के लक्षण –

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।। मनु०

इस श्लोक के माध्यम से महर्षि मनु ने धर्म के १० लक्षण बताये हैं । अतः विद्या के साथ जहाँ तप और धर्म जैसे शब्द आए हैं, वहाँ उनका अभिप्रायः उच्च मानवीय मूल्यों से है । किसी प्रकार की

www.thearyasamaj.org

संकीर्ण साम्प्रदायिक प्रवृत्ति से वहाँ कुछ भी अभिप्रेत नहीं है । वेद, दर्शन और मनुस्मृति आदि ग्रन्थ उस समय के हैं जब समस्त भूमण्डल में मनुष्य ही बसते थे । तब न कोई पारसी था, न यहूदी था, न ईसाई था, न मुसलमान था, न हिन्दू था । सब वेद के अनुयायी थे । उनके सामाजिक, वैयक्तिक, पारिवारिक, आध्यात्मिक कार्य-व्यवहार वेदानुशासित ही थे । सर्वत्र वैदिक धर्म था । यहाँ धर्म शब्द उन्हीं मानवीय गुणों के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

धार्मिकता से लाभ –

धर्म की सार्वकालिक और सार्वभौमिक उपयोगिता के विषय में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थ व्यवहारभानु में कहा है –

''जो (मनुष्य) धर्मयुक्त व्यवहार में ठीक-ठीक वर्त्तता है, उसको सर्वत्र सुख-लाभ और जो विपरीत वर्त्तता है, वह सदा दुःखी होकर अपनी हानि कर लेता है । जब मनुष्य धार्मिक होता है तब उसका विश्वास और मान्य शत्रु भी करते हैं और जब अधर्मी होता है तब उसका विश्वास और मान्य मित्र भी नहीं करते । इससे जो थोड़ी विद्यावाला भी मनुष्य श्रेष्ठ शिक्षा पाकर सुशील होता है उसका कोई भी कार्य नहीं बिगड़ता । इसलिए मनुष्य अपने और अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करे जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें ।''

साभार : आदर्श विद्यार्थी जीवन

(पृष्ठ १३ का शेषांश)

परे हैं । वैदिक धर्म समन्वय प्रधान धर्म है, समन्वय वहाँ होता है जहाँ अतिवादिता न हो । वैदिक धर्म आस्तिक धर्म है, यह ईश्वर की सत्ता में पूर्ण विश्वास रखता है इसमें ईश्वर की सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी और दयालुता सम्बंधी धारणाएँ अन्य मतों से भिन्न है । वैदिक धर्म की मान्यता है कि ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग योगाभ्यास है । आत्मा और परमात्मा के साक्षात्कार का कोई अन्य मार्ग नहीं है । यह जीवों को ईश्वर का अंश नहीं स्वीकार करता । महर्षि वैदिक धर्म के मान्यताओं के आधार पर जीवात्माओं को कर्म करने में स्वतंत्र और फलभोग में परतंत्र मानते हैं तथा आत्मा के आवागमन के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं परन्तु अन्य मत आत्मा को नित्यमान कर भी आवागमन को स्वीकार नहीं करते । वैदिक धर्म की मान्यता यह है कि ईश्वरीय आनन्द की प्राप्ति का नाम मोक्ष है । महर्षि ने वेद के आधार पर यह सिद्ध किया है कि जीव मोक्ष के पश्चात् पुनः जन्म को प्राप्त करता है । महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के आधार पर बताया कि परमात्मा, आत्मा तथा प्रकृति तीन अनादि सत्तायें हैं । परमात्मा सृष्टि का रचयिता है, वह आत्माओं को कर्म करने के लिए संसार का निर्माण करता है और प्रकृति से सृष्टि की रचना करता है, इस भाँति महर्षि दयानन्द जी ने समस्त जीवों के कल्याणार्थ वेद विचारों को श्रेष्ठ बताया ।

– २४७५, निराला नगर, शिवपुरी
सुल्तानपुर, (उ०प्र०)

–o–

www.thearyasamaj.org

गुरुवर को शत् शत् नमन !

– चान्दरतन दम्माणी

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द तथा वेदोक्त सनातन धर्म से मेरे अटूट जुड़ाव का बड़ा कारण वन्दनीय उपाध्याय परिवार है । मेरे अपने हिन्दी-साहित्य प्रेम ने कोई ४७/४८ वर्ष पूर्व एक शाम को कोठारी ऑफिस से घर लौटते वक्त माईक से आ रही एक ओजस्वी वाणी ने (जो पू० रमाकान्त जी उपाध्याय की थी), मुझे सत्यनारायण पार्क में चल रहे आर्य समाज के एक सार्वजनिक कार्यक्रम में जाने को मजबूर कर दिया । चन्द मिनटों में अपना प्रवचन पूर्ण करते वक्त शायद उन्होंने ही उस मंच पर अगले वक्ता के रूप में दिल्ली से पधारे प्रो० राजेन्द्र शुक्ल द्वारा पुनर्जन्म पर व्याख्यान तथा मथुरा से पधारे पं० ईश्वरी प्रसाद प्रेम के व्याख्यान इन दो और व्याख्यानों को सुनने का श्रोताओं से आह्वान किया। मैं भी उस दिन का पूरा कार्यक्रम समाप्त हुए बिना वहाँ से सरक नहीं सका ।

समीप ही बांसतल्ला स्ट्रीट अवस्थित अपने आवास पर पहुँचने पर आर्य समाज के कार्यक्रम में मेरे भाग लेने की बात जान कर पिताजी कुछ रुष्ट दिखे । अगली सायं उसी प्रकार सम्मिलित होकर मैं वहाँ से कुल तीन चार रुपये लागत के कुछ लघु ट्रेक्ट जिनमें दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित दयानन्द-चरित भी था अपने साथ लेकर घर आया जिन्हें देख लेने पर अब पूरी तरह मुझे पिताजी का कोप-भाजन बन जाना पड़ा । फिर तो आर्य समाज के प्रति मेरी अभिरुचि देख कर पूरे परिवार में संग्राम सा मच गया ।

सत्य का आग्रही मैं स्वयं को सुखद लगने वाले अपने निर्णय से अविचल रहा । धीरे-धीरे अन्य बातों के साथ-साथ मेरी संकल्प शक्ति तथा दृढ़ निश्चयता की स्थिति तथा अब स्वाध्याय के बल पर सनातन धर्म की बातों को मेरे द्वारा बताये जाने के परिणाम स्वरूप कोई १०/११ महीनों में घर-परिवार की सारी परिस्थितियाँ पुनः मेरे अनुकूल होती गयीं तथा पिताजी सहित पूरा परिवार ही धीरे-धीरे दयानन्द प्रतिपादित बातों को ही सत्य मानने लगा ।

इस बीच स्थानीय मुहम्मद अली पार्क में भी आर्य समाज का उत्सव हुआ था । बहुत बाधाएँ होते हुए भी वहाँ के सारे प्रवचनों को भी मैं पूरे मनोयोग से सुनता, फिर घर जाता । ऐसे में उत्सव की समाप्ति के बाद स्वनाम धन्य बाबू लालमनजी, श्री फूलचन्द आर्य जी दोनों पूज्य आचार्य उमाकान्तजी के साथ पार्क से बाहर निकल रहे थे, तभी शायद मेरे उत्सुक नयनों से मेरी मनःस्थिति को भांप कर पूज्य उमाकान्तजी ने मेरी तरफ इशारा कर कहा — 'जरा निकट से सम्पर्क बनाइये।' मैं तो तैयार ही था, उनसे पता लिया तथा आने वाले रविवारीय सत्संग पर मुंशीछत्ता स्थित आर्य समाज में पहुँच गया जहाँ मेरी तीव्र इच्छा देखकर यथासमय यथाविधि मेरे आर्य समाज बड़ाबाजार का नियमित सदस्य बनाए जाने की प्रक्रिया पूर्ण हुई । यहाँ उल्लेखनीय बात यह है कि इस बीच व इसके पूर्व आर्य समाज के वार्षिकोत्सवों पर होने वाले शंका समाधान के कार्यक्रम में मेरे द्वारा प्रस्तुत की गयी शंकाओं का पूर्ण एवं सटीक निराकरण भी **पूज्य पं० उमाकान्त उपाध्याय जी** के द्वारा ही हो सका था जो मुझे हूबहू

www.thearyasamaj.org

स्मरण है ।

मैं यह भी कहूँगा कि आर्य समाज के समस्त कार्यक्रमों को किस खूबी के साथ संयोजित करना जिससे महर्षि के महान् मिशन की रक्षा होते हुए कार्यक्रम सर्वोत्कृष्ट तथा वास्तव में उपयोगी हो सके यह गुर भी मैं उन्हीं से पा सका ।

वे आदर्श तथा सच्चे मायने में आर्य समाज के आचार्य थे । उनकी कृपादृष्टि मुझे अनवरत ज्ञानवर्धन की दिशा प्रदान करने तथा हमारे पूरे परिवार में काफी हद तक मिश्नरी भाव को जगाकर उसे बनाए रखने के लिए सदा रही । साथ ही परिवार के सुख-दुःख के अवसरों पर उनका स्नेहिल मार्गदर्शन सदा मिलता रहना हमारा अपना सौभाग्य था, इसे मेरे सभी परिजन बखूबी मानते हैं ।

अब चाहे आर्य समाज संगठन की बात हो, चाहे धार्मिक सिद्धान्तों पर यदा कदा उठने वाली असमंजस की बात हो, चाहे वैयक्तिक उलझनों से पार निकलने की बात हो — हमारे चाहने पर वे जो व्यवस्था प्रदान करते थे, वह धर्माधारित, सटीक व कल्याणकर होती थी । मैं सोचता हूँ कि उन जैसा निर्देश व व्यवस्था देने वाला सच्चा मार्गदर्शक अब हमें कहाँ उपलब्ध होगा ?

एक और बात ! वैदिक सिद्धान्तनिष्ठा की रक्षा करते रहना अवश्य सम्भव भी है आवश्यक भी यह बात मेरे मानस में गहरायी से जमी तो इसका प्रमुख कारण पूज्य गुरुवर **उमाकान्त उपाध्याय जी** हैं । मेरी आँखों से देखा एक दृष्टान्त यहाँ प्रस्तुत करना मैं आवश्यक व पर्याप्त समझता हूँ । वर्षों पूर्व स्थानीय माहेश्वरी सभा भवन कलकत्ता में सम्भवतः चतुर्भुजजी लखोटिया की एक विशाल शोकसभा चल रही थी जिसमें सभी वक्तागण दिवंगत के प्रति अपने उद्‌गार व्यक्त कर वहाँ रखे गये लखोटियाजी के चित्र को माल्यार्पण कर रहे थे । पं० उमाकांत जी की बारी आने पर, माला हाथ में लिए माइक पर आकर उनके प्रति (दिवंगत लखोटियाजी के प्रति) अपने भावोद्‌गार व्यक्त करने के उपरान्त वहाँ उस महती सार्वजनिक सभा में पूज्य आचार्य उमाकांत जी बोले —

''एक ओर श्री लाखोटिया जी स्वयं **दयानन्द के महान् मिशन के अनुयायी** और दूसरी ओर मैं स्वयं उसी **दयानन्द** के मिशन का सेवक । अतः उनके चित्र को पुष्पहार भेंट करने से स्वयं को विरत रखता हुआ दिवंगतात्मा को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित कर अपना स्थान ग्रहण करता हूँ ।'' और इस प्रकार पं० उमाकान्त जी की सिद्धान्त रक्षा की इस बात की सभा में पधारे प्रबुद्ध जनों ने बड़ी सराहना की थी । मेरे लिये भी यह बात प्रेरक बन गयी ।

पूज्य गुरुवर उमाकांत जी के अपने ऊपर किये गये उपकारों को भुलाना मेरे तथा हमारे परिवार के लोगों के लिए नामुमकिन है । उस दिव्यात्मा को मेरा शत्-शत् नमन ।

ट्रस्टी आर्य ट्रस्ट बड़ाबाजार
कोलकाता-७००००७
मो० ०९०५१४१४४२२
फाल्गुन कृष्ण १० संवत् - २०७१

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश : मेरी दृष्टि में

– श्री परीक्षित मंडल 'प्रेमी' साहित्यालंकार

सत्यार्थ प्रकाश वैदिक चिंतनधारा के कौस्तुभमणि पुण्यश्लोक परमहंस महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रभूत स्वाध्याय तथा शास्त्रीय शोधक्षम कारयित्री एवं भावयित्री युगपत् मेधा से उत्पन्न एक अनुपम विचारात्मक शोध ग्रंथ है । यह अमरग्रंथ चौदह समुल्लासों में विभाजित है । इसके सभी समुल्लासों में विवेच्य विषय की गवेषणात्मक विवृति है तथा उसके सभी पहलुओं का विधिवत् परीक्षण और परिबृंहित सम्यक् वर्गीकरण एवं प्रतिपादन शैली का संतुलन अनुपेक्षणीय तथा अविच्छिन्न उपलब्धियां अनुस्यूत हैं । ऐसे विचक्षण शोधात्मक अनुशीलन में केवल वे ही अनुसंधित्सु सफल होते हैं, जिन्हें नवनवोन्नमेषशालिनी प्रज्ञा तथा नवग्रहिणी अप्रतिम प्रतिभा प्रभा के साथ-साथ समानुपातिक समीक्षण और सुश्रृंखल विषय प्रतिपादन के लिए अद्भुत अविच्छिन्न अवधानता सिद्ध हुई रहती है और जिन्हें मनोगत विविध भाव अभिव्यंजना के प्रशस्त अध्ययन-अनुशीलन, प्राज्ञप्रौढ़ विष्वक् चिंतन, रूचिर रसपेशल तथा प्रांजल गद्य पर पूर्णरूपेण आधिपत्य रहता है । महाप्राज्ञ स्वामी दयानन्द सरस्वती की बहुमुखी मनीषा की अनुशीलन शैली, तमोहर तर्क किरण और बुद्धि-विवेक से विभूषित एवं परीक्षित प्रामाणिकता में ये समस्त परमोदात्त गुण तथा विमल विचार भावोर्जा से पिंडीभूत हैं तथा ये एक शुभाशय शोधग्रंथकार एवं प्रखर प्रौढ़ मीमांसक के सम्मिलित महामनस्वी के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं । वेद, वेदांत, उपनिषद, वेदांग, गीता, रामायण, महाभारत, स्मृति इत्यादि के मौलिक उद्वाचक, आख्याता और प्रणेता महर्षियों, रहस्यदर्शी साधकों का समुत्तम वैदिक विभावान् विचार इनकी तीग्मतेज पारसलेखनी से यहाँ नवीन परिबृंहित रूप में प्रदीप्तमान है । इसमें समस्त सर्वतोभद्र वैदिक संस्कृति एवं वैदिक आन्वीक्षिकी की सार्वभौमिक संचेतना का स्फुरण उपलब्ध होता है ।

वैदिक वाग्विभूति के अनन्य पुरोधा, प्राज्ञदर्शी दयानंद सरस्वती ने इस वृहदग्रंथ में वैदिक संस्कृति, धर्म, साधना को सात्विक सघनता, आध्यात्मिक दार्शनिक चारुता की चेतना की तेजस्विता, प्रखरता और अंधविश्वासों के अस्थि-कंकालों को अत्यंत बारीकी के साथ विराट् फलक पर उपस्थापित किया है । धर्म, दर्शन, आध्यात्म पर इतनी सर्वतोभद्र संतुलित दृष्टि तथा प्रखरतापूर्ण पुंखानुपुंख विचारणा अन्यत्र हुई हो, कहना कठिन है इसके अनुशीलन, चिंतन-अनुचिंतन से जीवन जीने की रमणीयतापूर्ण नयी सीखें मिलती हैं । यह मनुष्य को मनुष्य से और उपस्थित वर्त्तमान को शेष काल-खंडों से जोड़ता है । इससे संकीर्णता के विचारों की दीवारें टूटती हैं । यह कोटानुकोटि जन-गण के मन-मानस में एकात्ममानववाद का दिव्यालोक विकीर्ण करता है । इसके प्रथम समुल्लास में परमपिता ईश्वर के नामों तथा द्वितीय में संतानों की लालन-पालन विधि, तृतीय में ब्रह्मचर्य और पठन-पाठन की रीति-नीति एवं चतुर्थ में शुभ-विवाह, पति-पत्नी की मधुमय प्रीति का कलनिनाद विवर्द्धित होती है, पंचम में वानप्रस्थ, संन्यासाश्रम तथा षष्ठ में राजनीति की राजधर्म की शिक्षा-विधि की गरिमामयी मंजुलता प्रतिबिंबित है । सप्तम में वेदोक्त विविध विषयों के ज्ञान तथा अष्टम में जगदुत्पत्ति, स्थिति और प्रलय

www.thearyasamaj.org

विधान के कलाम को मूर्तिमान किया गया है । नवम में विद्या-अविद्या, मुक्ति-निर्वाण व्यवहार एवं दशम में आचार-अनाचार, भक्ष्याभक्ष्य विचार के प्रति सावधान किया गया है । इसके एकादश में भारतीय मत-मतांतर खंडन-मंडन एवं द्वादश में चर्वाक, बौद्ध-जैनमत का विवेचन-विश्लेषण सत्यामृत ज्योति के प्राणतत्त्व से ऊर्जित होकर किया गया है और तेरहवें में ईसाई मत का प्रत्याख्यान तथा चौदहवें में मुस्लिम-मत का प्रत्यालोचन विवेक-विलोचन से किया गया है और अंत में आर्य सत्य सनातन वैदिक धर्म की गौरव-गरिमा का प्रतिपादन किया है । अतः यह कहा जा सकता है कि महर्षि दयानंद विरचित सत्यार्थ प्रकाश में संप्रदायवाद का कलुष नहीं है, पाखंडवाद का उन्माद नहीं है और न गुरूडमवाद का कुटिल कोलाहल ही है ।

आज के हेतुवादी भौतिकवादी, ईश्वर-द्रोही, मानव-द्रोही, प्रेमद्रोही विघटनकारी युग में यह ग्रंथ जीवन की विविध विषादपूर्ण कुहेलिका से निकलकर अखिल मानवों को तमसो मा ज्योतिर्गमय के स्वर्णिम प्रांगण में पदार्पण करने की दिव्य प्रेरणा प्रदान करता है । इसमें अखिल मानव जीवन के सामरस्य, सौमनस्य की श्रेयःमयी शील, संयम, मान-मर्यादा और नैतिक-धार्मिक मूल्य आधारित ग्रहणीय जीवनादर्शो को विराट् फलक पर प्राणवंत किया गया है । साथ ही साथ इसमें प्रेयःमार्ग को भी अत्यंत प्रखरता, तेजस्विता, सघनता तथा प्रसादगुण संपन्नता और विशदता के साथ संवाद शैली में प्रस्तुत किया गया है । मंत्रवक्ता दयानंद सरस्वती ने इस शोधात्मक प्रबंध में ३७७ ग्रंथों का उद्धरण प्रस्तुत किया है तथा इसमें १५४२ वेदमंत्रों या श्लोकों को संदर्भ के साथ संग्रथित किया है । जो हमारे लिए एक जाज्वल्यमान प्रतिमान है । इसमें मूल्य-मर्यादाहीन रोमानियत और मरणोन्मुख कल्मष-कुटिलता का कल्लोल बिलकुल नहीं है । यह मौलिक विचारों तथा सुविचारित स्वस्तिप्रद अनुभूति के सूक्ष्मतम सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक और विश्वमानववाद की प्रतिबद्धता का सामासिक विश्वकोष है । इसमें वैदिक शाश्वत संस्कृति के उपदेश की सात्विकता सरसता के साथ प्रतिबिंबित हुई है, जो अखिल-मानवों को अल्प से महत् में ले जाने वाली है, जड़ात्मक विषाद से चिन्मय आनंद-उछाह में ले जाने वाली है, तामसी-तिमिर से दिव्यालोक में ले जाने वाली है, मृत्यु से अमृत में ले जाने वाली है। यह पाखंड की कुरूप कुहेलिका और रूढ़िग्रस्त कलुष कालिमा से आच्छादित अखिल मानवों को अमृत-ज्योति के प्राणतत्व से प्रदीप्तमान करता है । इसकी विषयानुक्रमणिका के प्रत्यालोचन से प्रतीत होता है कि इसकी पराभास्वर किरण (कास्मिक रेज) सार्वभौमिक (यूनिवर्सल) सत्य-ऋत पर आधारित है । तभी तो विविध वैदिक संदर्भो तथा प्रयुक्त उपादानों के बारीक विश्लेषण से वेदार्थ के प्रमाण पुरुष महर्षि दयानंद सरस्वती के विभासमय श्रम और असाधारण पांडित्य की ओर सहज ही सहृदय पाठकों का ध्यान आकर्षित होता है ।

यहाँ यह कह देना अप्रासंगिक न होगा कि गुरुदेव विद्वत्प्रवर आचार्य पंडित उमाकांतजी उपाध्याय (कोलकाता) की उत्साहवर्धक दिव्य प्रेरणा से प्रेरित-प्रभावित होकर मैं सत्यार्थ प्रकाश का आद्योपांत कई बार पारायण किया और उससे बहुत लाभान्वित हुआ । पुस्तक पुण्यश्लोक स्वामी दयानंद सरस्वती

(शेष पृष्ठ २३ पर)

www.thearyasamaj.org

।। ओ३म्।।

कल्पना करें कि यदि आज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हमारे बीच पहुंच जायें तो वह क्या कहते !

मेरा व्यक्तिगत जागरूक चिन्तन

– पं० उम्मेद सिंह विशारद
वैदिक प्रचारक

मान्यवर श्रद्धेय आर्यो ! सादर नमस्ते ।

यदि हम आज कल्पना करे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हमारे बीच आ जाते तो वह आर्य जगत की गतिविधियां, कार्य प्रणाली, एवं आर्य जगत से बाहर सनातन धर्म मानने वालों की कार्य प्रणाली देखकर आश्चर्य करते । वह सोचेंगे कि जिस ईश्वरीय वाणी वैदिक धर्म व सामाजिक राजनैतिक सुधार के लिये मैंने जीवन बलिदान किया था, वह तो आज इस धरती पर बहुत ज्यादा पाखण्ड बढ़ गया है । इन पाखण्डों को दूर करने के लिए मैंने आर्य समाज रूपी ज्योति जगाई थी, वह जल तो रही है किन्तु उतनी तेज रोशनी से नहीं । धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक पाखण्ड का अन्धकार बहुत बढ़ गया है, आज आर्य समाज की ज्योति उस अन्धकार को दूर करने में क्यों अक्षम हो रही है, वे सोचते ?

महर्षि दयानन्द जी सोचते :– मैंने सत्यार्थ प्रकाश में विशेष कर आर्यों को निर्देश दिया कि

लोकेषणायाश्य वित्तेषणायाश्य पुत्रेषणायाश्चोत्थायाथभैक्षचर्यं चरन्ति ।।

(शत०का० सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थात् :- लोक में प्रतिष्ठा व लाभ धन से भोग वा मान्य पुत्रादि के मोह से अलग होके गृहस्थी, वानप्रस्थी व संन्यासी लोग भिक्षुक होकर रात दिन मोक्ष के साधनों में तत्पर रहे ।

महर्षि कहते :- हे आर्यो, तुम तीनों वर्ग अपने सिद्धान्तो से कही न कहीं समझौता कर रहे हो, यदि पूर्ण सिद्धान्तो पुरूषार्थ व आदर्शो पर चलते तो आज कृणवन्तो विश्वमार्यम का लक्ष्य पूरा कर लेते ।

गृहस्थस्तु यदा पश्येद्वलीपलित मात्मनः।
अपत्यस्यैव चापत्यं तदारण्यं समाश्रयेत।।

(मनु० ६।१।२ सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थात् :- जब गृहस्थी सिर के श्वेत केश और त्वचा ढीली हो जाये और लड़के का लड़का भी हो गया हो तब वन में जाके बसे ।

स्वध्यायेन जपैर्होमैस्त्रेविद्येनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यक्षैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः।।

संस्कारविधि गृहाश्रम प्रकरम् (मनुः)

www.thearyasamaj.org

अर्थात् :- गृहस्थी को पढ़ने पढ़ाने विचार करने कराने, नाना विध होम सम्पूर्ण वेदो को पढ़ने-पढ़ाने धर्म से सन्तानोत्पत्ति व पंच महायज्ञ करने का आदेश ।

महर्षि कहते हे आर्यो ! सर्व प्रथम अपने को, परिवार को आर्य बनावो, फिर जगत् को आर्य बनावो ।

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, वृद्धा न ते येन वदन्ति धर्मम्।
नासौ धर्मो यत्र न सत्य मस्ति न तत् सत्यं यच्छलेना भ्युपेतम्।।

(महाभारत-सत्यार्थ प्रकाश से)

अर्थात् :- वह सभा नहीं जिसमें वृद्ध न हो, व वृद्ध नहीं जो धर्म की बात नहीं बोलते, वह धर्म नहीं जिसमें सत्य न हो और न वह सत्य है जो छल से युक्त हो ।

महर्षि कहते हे आर्यो ! तुम सबको सदैव सत्य को ग्रहण और असत्य को छोड़ने के लिये तत्पर रहना चाहिए । चाहे संसार बैरी हो जाये, मृत्यु भी सम्मुख हो किन्तु सत्य पथ को कभी नहीं छोड़ना चाहिए ।

ओ३म् इन्द्र बर्धन्तो प्तुरः कृण्वन्तो विश्वामार्यम् ।
अपघ्नन्तो अरावणः।। (ऋ०)

महर्षि कहते हे आर्यो ! मैं तुम्हे आशीर्वाद देकर तुम्हारी प्रशंसा करता हूं तुमने अब तक वेदों की रक्षा की है । वैदिक धर्म की मशाल जला के रखी है । यज्ञों को जीवित रखा हुआ है । आर्य समाज भवनों का बहुतायत में निर्माण किया है । किन्तु अभी बहुत कुछ पुरुषार्थ करना बाकी है । सारे विश्व को आर्य बनाने का संकल्प पूरा करना है ।

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनासि जानताम् ।
देवो भांग यथा पूर्वे संजनाना उपासते ।। (ऋ०)

महर्षि कहते हे आर्यो ! इस मंत्र को तुम भूलते जा रहे हो । क्योंकि आर्य समाज की स्थापना के बाद पचास साल तक तो तुम आर्यो ने त्याग, पुरुषार्थ, व बलिदान की मिसाल कायम की थी और एक संगठन में चलते थे । किन्तु अब महसूस हो रहा है तुम इकाई आर्य समाज में, व प्रतिनिधि व सार्वदेशिक सभाओं में आपस में लड़ रहे हो । तुम लोगों के झगड़े न्यायालयों में भी पहुंच गये हैं जबकि न्यायपालिका तुम्हारे अधीन होनी चाहिए थी । अभी भी वक्त रहते एक हो जाओ सब झगड़े समाप्त करो । एक संगठन के झण्डे के नीचे कार्य करो ।

यत्र धर्मो ह्यधर्म्मेण सत्यं यत्रा नृतेन च ।
हयन्ते प्रेक्षमाणानां हतास्तत्र सभा सदः।।

—संस्कारविधि गृहाश्रम प्रकरणम्

अर्थात् जिस सभा में सभासदो को देखते-देखते अधर्म से धर्म और झूठ से सच मारा जाता हो। उस सभा के सभासद मरे हुए के समान है ।

महर्षि कहते हे आर्यो ! देखने में आ रहा है आप लोग अर्थात् संन्यासियों, उपदेशकों, पुरोहितों व पदाधिकारियों में कहीं न कहीं गुटबाजी व ईर्ष्या से सत्य का हनन हो रहा है । इसलिए मेरा आदेश

www.thearyasamaj.org

है कि तुम सभी आर्य आपसी कलह छोड़ कर सत्यमार्ग पर आ जाओ और अपनी-अपनी हठधर्मी छोड़ो। जिससे आर्य समाज की सर्वांगीण उन्नति होगी और सभी वर्ग अपना-अपना अहंकार छोड़ कर ईर्ष्या द्वेष समाप्त करो । सारा संसार तुम्हारी ओर देख रहा है ।

भारतवर्ष (आर्यवर्त्त) और आर्यों का सौभाग्य

ईश्वर की कृपा से भारत जैसे ऋषि मुनियों के देश में सारे विश्व के देशों को छोड़कर भारत की पवित्र भूमि में ही ईशकृपा से देव महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ है । यह भारतवासियों का परम सौभाग्य है कि सृष्टि उत्पत्ति के देश में ही जन्म हुआ । हमारे कई जन्मो के पुण्य प्रताप से विश्व की सर्वोच्च धार्मिक, सामाजिक संगठन आर्य समाज से हमें जुड़ने व कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । इन दो कारणों से हमारा परम् सौभाग्य है ।

आत्म निवेदन

मान्यवर आर्य श्रेष्ठों जी ! हम महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी हैं तो हमें हर समय आभास करना चाहिए कि पूज्य देव दयानन्द हमारे मार्गदर्शक सदैव हमारे सम्मुख है, और हमारे प्रत्येक कार्यो को देख रहे हैं । लाखों जन्मों के पुण्य प्रताप से वेद मार्ग पर चलने का यह जीवन हमें प्राप्त हुआ है। महर्षि दयानन्द जी ने हमें सच्चे ईश्वर व उनकी वाणी वेदों का मार्ग बताया है । आज हमारे चारों ओर घोर अन्धविश्वास व नयी नयी धार्मिक व सामाजिक कुरीतियां झाड़ियों की तरह उग रही हैं, हमारे सम्मुख विशाल चुनौतियां खड़ी हैं । हमें समस्त भेद, ईष्या, अहंकार, एक शक्तिशाली संगठन में एक स्वर से इन चुनौतियों के निवारण हेतु आन्दोलित होना पड़ेगा । तभी हम महर्षि दयानन्द की जय — आर्य समाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे, ओ३म् का झण्डा ऊँचा रहे । सच्चे मायनों में कहने के अधिकारी होंगे ।

गढ़ निवास मोहकमपुर,
देहरादून
मो० ९४११५१२०१९

(पृष्ठ २३ का शेषांश)

के व्यापक अध्ययन-अनुशीलन, गंभीर चिंतन और गहन रसानुभूति का परिणाम है । आध्यात्मिक मार्ग के साधकों के लिए यह ग्रंथ एक विशेष आकर्षण की वस्तु है । क्योंकि सत्यार्थ प्रकाश समस्त वेद संहिता एवं वैदिक वाङ्मय की सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक प्रतिध्वनि है । इसमें भारतीय आध्यात्म, दर्शन के सार्वभौम सिद्धांतों की सारभूत सूक्ष्म चिंत्यधाराएँ अपनी समग्र ऊर्जस्विता के साथ प्रवहमान हैं मेरे लिए अहोभाग्य है कि स्मृतिशेष गुरूदेव की असीम कृपा से मैंने वेद, वेदांत मार्गोचित आस्तिकवादी दार्शनिकता से अपने को आप्लावित किया है । अतः उनके प्रति अल्प शब्दों के माध्यम से कृतज्ञता-ज्ञापन करना मेरी धृष्टता होगी । किमधिकम् ।

वेदसदन अमरपुर, पो०-पथरा, जिला-गोड्डा
मो० ९१६२२०८००५ (झारखण्ड)-८१४१३३

www.thearyasamaj.org

''अकाल मृत्यु तथा भूत-प्रेत योनि की विवेचना''

– खुशहाल चन्द्र आर्य

भूत-प्रेत की उत्पत्ति के विषय में कुछ अज्ञानी, अशिक्षित और स्वार्थी लोगों में यह धारणा बनी हुई है कि जिनकी अकाल मृत्यु होती है, अर्थात् जिनकी मृत्यु दुर्घटना से या अस्वाभाविक मृत्यु होती है । ये लोग अपने शेष जीवन में भूत-प्रेत योनि में चले जाते हैं । यह सर्वमान्य बात है कि जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है । यह बात भूत-प्रेत पर भी लागू होनी चाहिए । जीव ने यदि भूत-प्रेत की योनि में जन्म लिया है तो उसकी मृत्यु भी होनी चाहिए । परन्तु उनके मरने की बात कभी सुनने में नहीं आई ।

अकाल मृत्यु प्राप्त जीव भूत-प्रेत की योनि में जाते हैं, यह सिद्धान्त कीट-पतंग, पशु-पक्षी और अनेकों अदृश्य जीवों पर भी लागू होनी चाहिए, जो प्रतिदिन मनुष्यों द्वारा मारे जाते हैं या मार दिये जाते है या प्राकृतिक आपदाओं-आंधी, तूफान, भूकम्प, बाढ़ आदि में मनुष्यों से अधिक मर जाते हैं । इस सिद्धान्त के अनुसार इनको भी भूत-प्रेत को योनि में जाना चाहिए ? तब कल्पना करें कि इस संसार में भूतों की संख्या मनुष्यों की आबादी से भी कई गुना अधिक होनी चाहिए । किन्तु ऐसा देखने में नहीं आता है । अतः यह कहना कि अकाल मृत्यु प्राप्त जीव भूत-प्रेत की योनि में जन्म लेते हैं, यह न तर्क सम्मत है और न विज्ञान सम्मत है ।

भूत-प्रेत की योनि होती ही नहीं :- जीव का स्थूल शरीर, मन व इन्द्रियाँ यदि साधनों के साथ ईश्वरीय व्यवस्थानुसार संयोग, जन्म है । अर्थात् सूक्ष्म शरीर युक्त जीव का स्थूल शरीर के साथ संयोग का नाम ही योनि है । केवल सूक्ष्म शरीर के आधार पर भूत-प्रेत योनि को प्रामाणिक नहीं माना जा सकता है, क्योंकि बिना शरीर के कोई भी योनि नहीं होती है । स्थूल शरीर के बिना कोई भी सूक्ष्म शरीर न तो दिखाई देता है और न कोई भौतिक क्रिया ही कर सकता है । प्रजनन की विधाओं के आधार पर योनियों को चार भागों में विभाजित किया गया है — जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उदभिज्ज । जरायुज का तात्पर्य है जेर से होने वाले प्राणी जैसे मनुष्य, गाय, भैंस । अण्डज का तात्पर्य है अण्डे से होने वाले प्राणी जिसमें अधिकतर पक्षी आ जाते हैं । स्वेदज का तात्पर्य मैल या गन्दगी में पैदा होने वाले प्राणी, जैसे जूएँ, गन्दी नाली के कीटाणु । उदभिज्ज का तात्पर्य है, जमीन से उगने वाले प्राणी जैसे पेड़-पौधे । इन्हीं चार योनियों में समस्त प्राणियों का समावेश हो जाता है । इसके अतिरिक्त पाँचवी योनि का कोई विधान नहीं है । यह ईश्वर प्रणीत शाश्वत सिद्धान्त है । इसका उल्लंघन करने की शक्ति किसी भी जीव में नहीं है । स्मरण रहे जीव सर्वदा ईश्वराधीन होता है । वेद, शास्त्र, रामायण, और गीता आदि प्राचीन ग्रन्थों में कहीं पर भी भूत-प्रेत की योनि का विधान नहीं है ।

कहा यह जाता है, जिनकी अकाल मृत्यु होती है यानी जिनकी मृत्यु दुर्घटना से या अस्वाभाविक मृत्यु होती है, ये लोग अपने शेष जीवन में भूत-प्रेत योनि में चले जाते है और इधर-उधर भटकते रहते हैं । कभी-कभी यह भूत-प्रेत परकाया में प्रवेश कर जाते हैं और उनको सताते हैं या कष्ट देते हैं । वे सामान्यतः अपने परिचितों और स्वजनों को ही अधिक परेशान करते हैं या कष्ट देते हैं । दिवंगत आत्मा का इधर-उधर भटकना सम्भव नहीं, क्योंकि वह ईश्वराधीन होने के कारण स्वतन्त्रता से कुछ भी नहीं कर सकता है । परकाया में प्रवेश करना भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है, क्योंकि एक शरीर में एक

www.thearyasamaj.org

ही आत्मा रह सकती है । आत्मा प्रलयकाल और मोक्षावस्था को छोड़कर वह बिना शरीर के कभी नहीं रहता है । इन दोनों व्यवस्थाओं में वह अदृश्य रहता है ।

यह निर्विवाद सत्य है कि मृत्यु के पश्चात् ईश्वरीय व्यवस्थानुसार जीव या तो दूसरे शरीर को धारण कर लेता है या मोक्ष को प्राप्त होता है । इस बीच उसके किसी अन्य के शरीर में प्रविष्ट होने या इधर-उधर घूमकर लोगों के जीवन में अच्छा-बुरा दखल देने का प्रश्न ही नहीं उठता है । मोक्ष प्राप्त जीवात्माएँ पवित्र और आनन्दमग्न रहती है । वह परकाया में प्रवेश कर किसी मनुष्य को कष्ट या यातनाएं दें यह मानना अस्वाभाविक है ।

मृत्यु.के पश्चात् जीव को एक शरीर से निकल कर दूसरे शरीर में जाने में कितना समय मिलता है, इसका निर्देश वेदान्त दर्शन ३।२।२३ बृहदारण्यक उपनिषद ४।४।३ तथा गरूड़ पुराण—प्रेत अध्याय २०, श्लोक ७५ में लिखा है कि — जैसे घास की घूँडी या जोंक या तृणजलायुक्त तभी पीछे से दूसरा पांव उठाती है जबकि अगला पाँव रख लेती है, ठीक वैसे ही आत्मा भी अपने पहले शरीर को छोड़ने से पूर्व ईश्वर की न्याययुक्त कार्यफल व्यवस्था से अगले शरीर में स्थिति कर लेने के पश्चात् ही अपने उस शरीर को छोड़ता है ।

स्थूल शरीर के बिना कार्य करना सम्भव नहीं, अतः ईश्वर की व्यवस्था में यह आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को तुरन्त ग्रहण कर लेता है । महाभारत वनपर्व १८३।७७ में कहा है — आयु पूर्ण होने पर आत्मा अपने जर्जर शरीर का परित्याग करके उसी क्षण किसी दूसरे शरीर में प्रकट होता है । एक शरीर को छोड़ने और दूसरे शरीर को ग्रहण करने के मध्य में उसे क्षण भर का समय भी नहीं लगता । अतः वैदिक सिद्धान्त के अनुसार मृत्यु और जन्म के बीच कोई ऐसा समय ही नहीं बचता कि जिसमें जीवात्मा इधर-उधर भटक सके या भूत-प्रेत बन सके । सच्चाई यह है कि शरीर छोड़ने के पश्चात् जीवात्मा परमात्मा के अधीन रहता है और वह स्वतन्त्रता से कुछ नहीं कर सकता । संसार का कोई भी व्यक्ति भूत-प्रेत आदि के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर सकता, अतः निश्चित् रहिये कि तथाकथित भूतों की न कोई सता है और न कोई योनि है ।

सच्चाई यह है कि दुर्घटना या अस्वाभाविक मृत्यु प्राप्त व्यक्ति अपनी बाकी की उम्र अगली योनि में व्यतीत करता है अर्थात् उसकी जो अगली योनि में जितनी उम्र निर्धारित होती है उसमें पहले वाली बाकी उम्र जोड़ दी जाती है । अब प्रश्न उठता है कि मृत्यु प्राप्त व्यक्ति यदि मनुष्य योनि में भी उसी स्तर में जन्म लेता है तब तो यह बात लाग् हो सकती है । पर वह यदि अन्य योनियों में यानो पशु-पक्षी व कीट-पतंग की योनि में जाता है या पहले वाले मनुष्य जीवन के ऊँचे या नीचे स्तर की मनुष्य योनि ही पाता है तो उसकी आयु ईश्वर की कर्म न्याय व्यवस्था के अनुसार घट या बढ़ भी सकती है ।

यह लेख मैंने अति उपयोगी समझ कर ''मानव निर्माण प्रथम सोपान'' नामक पुस्तक से उद्धृत किया है जिसमें अन्त की ६-७ लाईनें मैंने अपने स्वयं के विचार से लिखी है जिससे लेख के उद्देश्य की पूर्ति होती है । इस लेख के पढ़ने से हर व्यक्ति भूत-प्रेत की योनि नहीं होती यानी भूत-प्रेत का भय एक प्रकार का बहम है, इसलिए हर समझदार व्यक्ति को यह समझना चाहिए और अपने बच्चों को भी यही शिक्षा देनी चाहिए ताकि बच्चे निर्भीक बने और देश-सेवा अधिक कर सकें ।

दूरभाष : ०३३-२२१८-३८२५
मोबाईल : ९८३०१३५७९४

C/o गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गाँधी रोड, २ तल्ला, कोलकाता-७

www.thearyasamaj.org

(पृष्ठ २ का शेषांश)

अन्य दिनों में आश्रम व्यवस्था पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि किस प्रकार ऋषियों ने समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए आश्रम व्यवस्था का विधान किया है, जिससे समाज सुखी एवं समृद्ध हो सके । उन्होंने कहा कि आश्रम शब्द में ''श्रम'' शब्द का उपयोग हमें बताता है कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी वर्ण या आश्रम का क्यों न हो, सबको श्रम पुरुषार्थ करना चाहिए निठल्ले बैठने से कभी कोई समाज या राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता । जन्म से लेकर २५ वर्ष तक विद्याभ्यास एवं तपस्या का जीवन व्यतीत करने का नाम ब्रह्मचर्याश्रम है और फिर २५ से होकर ५० तक गृहस्थ जीवन में संस्कारवान् संतान राष्ट्र को समर्पित करने के लिए संकल्प से कार्य करना और जब जिम्मेवारियां थोड़ी कम हो जाए लड़का कमाने लगे समझदार हो जाए, लड़के का भी लड़का हो जाए तब वानप्रस्थ ग्रहण कर परिवार से थोड़ा उपर उठकर सामाजिक जिम्मेवारियों में समय अधिक लगाना और साधना, स्वाध्याय, सत्संग, तप करते हुए संन्यासाश्रम की ओर आगे बढ़ना यही आश्रम व्यवस्था है ।

इस प्रकार कर्म व्यवस्था पर भी बड़े ही दार्शनिक रूप से प्रकाश डाला और कहा कि जो पापकर्म हम लोगों ने किये हैं या कर रहे हैं, उनका फल हमें भोगना ही पड़ता है । विशेष तीर्थाटन, गंगा स्नान आदि से पापकर्म नहीं धुलते । हमें किये हुए कर्मों का फल तो मिलता ही है । परन्तु जब पता लग जाये कि ये पापकर्म हैं, ये बुरे कर्म है, ये मार्ग हिंसा एवं असत्य का है तो उसे शीघ्र छोड़ देना चाहिए और ईश्वरोपासना, सत्संग, स्वाध्याय जप तप आदि के द्वारा आगे पाप न करने की प्रेरणा लेनी चाहिए । इन सबका प्रभाव ये होगा कि कभी पूर्वजन्म या इस जन्म में किये गये पापरूप कर्मों का फल दुःख के रूप में उपस्थित हो भी जाये तो उसे सहन करने की शक्ति मिलती है। इसलिए जीवन में हमे सदैव अच्छे कर्म ही करने चाहिए क्योंकि अच्छे कर्मों का फल सुख एवं बुरे कर्मों का फल सदैव दुःख रूप में मिलता है ।

पाचवें दिन उन्होंने वेद को ईश्वरीय ज्ञान होने की बात पर प्रकाश डाला और कहा कि दुनिया में जितने भी मतसम्प्रदाय अभी दिखाई पड़ते हैं, उन सबका इतिहास या उनको बने ३६०० वर्ष ही हुए हैं । अर्थात् ३७१० वर्ष पूर्व इस दुनिया में कोई मत, सम्प्रदाय नहीं था तब सिर्फ एक ही वैदिक धर्म था । तब सब लोग वेदों के आधार पर अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र का संचालन किया करते थे । सभी लोग शान्ति में रहा करते थे । किन्तु आज सारा विश्व भूखण्ड के आधार पर, मत, सम्प्रदाय धर्म, महापुरुष, भगवान एवं जाति मजहब के नाम पर लड़ रहा है । मानव एवं मानवता कहीं खो सी गई है ।

''बहुपरिवारीय बहुकुण्डीय यज्ञ'' — प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बहुपरिवारीय बहुकुण्डीय यज्ञ बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग १०० परिवार सम्मिलित हुए, सभी ने मिलकर यज्ञ किया । जिसमें आर्यसमाज बड़ाबाजार के धर्माचार्य पं० राहुलदेव जी ने बड़े ही सुन्दर तरीके से शास्त्रीय पद्धति से यज्ञ सम्पन्न करवाया जिससे लोग मन्त्र मुग्ध हो गये और लोगों ने काफी प्रशंसा भी की । इसके पश्चात् स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों को लेकर आचार्य ब्रह्मदत्त जी (गुरुकुल कोलाघाट), पं० योगेशराज उपाध्याय, पं० देव नारायण तिवारी, श्री रमेश अग्रवाल, श्री मनीराम आर्य ने अपने-अपने विचार रखे । पं० श्यामनन्द आर्य, पं० अपूर्व देवशर्मा जी ने भजनों द्वारा समा बांधा । तत्पश्चात स्वामी आर्यवेश जी ने अपना सारगर्भित एवं मुख्य उद्बोधन रखा जो बहुत

ही प्रेरणास्पद था, उन्होंने आर्यो को संगठित होकर मानवता की रक्षा के लिए प्रत्येक दिशाओं में कार्य करने की बात कहीं, उन्होंने कहा कि हमारा सबका मुख्य कर्तव्य परोपकार होना चाहिए । स्वामी दयानन्द ने भी अपना सारा जीवन परोपकार के लिए समर्पित किया था और आर्यसमाज के छठे नियम में स्पष्ट रूप से कहा है कि ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।''

इसलिए हम सभी को स्वामी दयानन्द के महान मन्तव्यों को शिरोधार्य करके इस ओर बड़े व्यापकरूप से प्रचार-प्रसार करना चाहिए । इस प्रकार स्वामी आर्यवेश जी ने इन छः दिनों में बहुत सुन्दर तरीके से अनेक विषयों पर प्रकाश डाला जो सभी श्रोताओं को बहुत अच्छा लगा । समाज के अधिकारियों ने भी काफी प्रशंसा की और उनके प्रति आभार व्यक्त किया । इस अन्तिम दिवस के कार्यक्रम में आर्यसमाज बड़ाबाजार के कार्यकर्ता प्रधान श्री चांदरतन दम्माणी ने कार्यक्रम का बड़े सुन्दर ढंग से संचालन किया साथ ही कार्यक्रम के प्रारम्भ में स्वामी दयानन्द की विशेषताओं पर बड़ी ही मार्मिक एवं प्रेरक भूमिका भी रखी । अन्त में समाज के मन्त्री श्री नरेश गुप्ता ने सभी को धन्यवाद दिया । इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से श्री दीनदयाल गुप्त, श्री जगदीश प्रसाद आर्य, श्री श्रीराम आर्य, श्री सुरेश चन्द जायसवाल, श्री दीपक आर्य, श्री आनन्ददेव आर्य, श्री खुशहाल चन्द्र आर्य, श्री योगेन्द्र गुप्ता, श्री अरूण आर्य, श्री प्रमोद अग्रवाल, श्री राजेश आर्य, श्री सुरेश अग्रवाल एवं स्थानीय विद्वानों में पं० वेदभानु, पं० वेदप्रकाश शास्त्री, पं० कृष्णदेव शास्त्री, पं० देवव्रत तिवारी आदि भी उपस्थित रहे और सहयोग प्रदान किया । (पं० राहुलदेव द्वारा प्रेषित रिपोर्ट)

।।ओ३म्।।

वैदिक मिशन मुम्बई

अध्यक्ष - **सोमदेव शास्त्री** - ०९८६९६६८१३० — मन्त्री - **संदीप आर्य** - ०९९६९०३७८३७

सम्मेलन (संगोष्ठी)

विषय – वेदों में चिकित्सा विज्ञान दिनांक - १८-१९ मार्च २०१७

मान्यवर

सादर नमस्ते ।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से वैदिक मिशन मुम्बई के द्वारा आर्यसमाज सान्ताक्रुझ मुम्बई में 'वेदों में चिकित्सा विज्ञान' विषय पर सम्मेलन (संगोष्ठी) का आयोजन किया गया है । जिसमें हृदय रोग (हार्ट अटेक), मधुमेह (डाइबिटिज), रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) कैंसर एवं मानसिक आदि रोगों के कारण, लक्षण और इनको दूर करने के उपाय आदि विषयों पर इस विषयक चिकित्सक अपना गहन चिन्तन एवं अनुभव से श्रोताओं को लाभान्वित करेंगे । अतः आप अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें ।

सम्मेलन अध्यक्ष - **स्वामी प्रणवानन्दजी**, दिल्ली

–: विशिष्ट अतिथि महानुभाव :–

। **स्वामी आर्यवेशजी** - महामन्त्री वैदिक विरक्त मंडल, दिल्ली ।। **श्री सज्जन सिंहजी कोठारी** - लोकायुक्त राजस्थान सरकार, जयपुर ।। **श्री स्वामी व्रतानन्दजी** - प्रसिद्ध चिकित्सक, उड़ीसा प्रान्त ।। **श्री मिठाईलालजी सिंह** - प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई ।। **श्री ओमप्रकाश मस्करा** - अध्यक्ष वेदप्रचार ट्रस्ट, कोलकाता ।। **श्री अरुणजी अबरोल** - मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई ।। **श्री ठा० विक्रम सिंहजी** - अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली ।। **श्री डॉ. विनायक तायडे** - चिकित्सक राजभवन, महाराष्ट्र सरकार ।। **श्री डॉ० राधेश्याम आर्य** - बीकानेर (राजस्थान) ।

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई, विट्ठलभाई पटेल रोड़, सान्ताक्रुज (पश्चिम), मुम्बई-४०००५४

दूरभाष : ०२२-२६६०२८००/२६६०२०७५

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज कलकत्ता के प्रकाशन

पुस्तक विक्रेता, आर्य संस्थाओं, उपदेशकों को ४० प्रतिशत की छूट दी जाती है ।

पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
१. युग निर्माता सत्यार्थ प्रकाश-संदर्भ दर्पण (ऐतिहासिक संदर्भ में सत्यार्थ प्रकाश की यात्रा का दस्तावेज)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७०.००
२. स्वामी दयानन्द का राजनीति दर्शन (स्वामी दयानन्द के राजनीत दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन)	डॉ० लाल साहेब सिंह	५०.००
३. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज की देन (उन्नीस उत्कृष्ट निबंधों का संग्रह)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय द्वारा सम्पादित	१५.००
४. त्रैतवाद का उद्भव और विकास (त्रैतवाद का उसके उद्भव और विकास के वैशिष्ट्य को स्पष्ट करने वाला दर्शन का शोधपूर्ण ग्रंथ)	डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री	२०.००
५. उपनिषद् रहस्य (ईश केन और प्रश्न उपनिषदों की सारगर्भित व्याख्या)	महात्मा नारायण स्वामी "सरस्वती"	२०.००
६. श्री श्री दयानन्द चरित	श्री सत्यबन्धुदास	१०.००
७. महर्षि दयानन्द की देन (निबन्धों का संग्रह)	आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा प्रकाशित	३०.००
८. धर्मवीर पं० लेखराम	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती	५०.००
९. आनन्द संग्रह (स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज के उपदेशामृत)	वीतराग स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज	२५.००
१०. भाई परमानन्द (बलिदानी वंश के कुलदीपक की अमर कहानी)	श्री बनारसी सिंह	१०.००
११. धर्म का आदि स्रोत	पं० गंगाप्रसाद जी	३०.००
१२. संकल्प सिद्धि (विचारों के संकल्प विकल्प का अनोखा चिन्तन)	स्वामी ज्ञानाश्रम	३०.००
१३. ज्योतिर्मय (श्रीयुत् टी. एल. वास्वानी द्वारा लिखित (Torch Bearer)) का हिन्दी अनुवाद	टी.एल. वास्वानी	३०.००
१४. वेद-वैभव	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१५०.००
१५. कर्मकाण्ड	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१०.००
१६. स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान	ले० सत्यप्रिय शास्त्री	५०.००
१७. आर्यसमाज कलकत्ता का इतिहास	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	८०.००
१८. मेरे पिता	इन्द्र विद्यावाचस्पति	५०.००
१९. वेद और स्वामी दयानन्द	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	४०.००
२०. व्यतीत के यश की धरोहर (महासम्मेलनों के संस्मरणात्मक आकलन)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	६०.००
२१. Torch Bearer	टी० एल० वास्वानी	३५.००
२२. पं० गुरुदत्त लेखावली	मुनिवर पं० गुरुदत्तजी 'विद्यार्थी'	२५.००
२३. प्रार्थना प्रवचन	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	५०.००
२४. सन्ध्यारहस्य एवं संन्ध्या अष्टांग योग	प्रो० चमूपति एवं स्व० आत्मानन्द (एक जिल्द)	३०.००
२५. बंगाल शास्त्रार्थ	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	४०.००
२६. वेद में गोरक्षा या गोवध	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	५.००
२७. वेद रहस्य	महात्मा नारायण स्वामी जी	३५.००
२८. वेद वन्दन	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१६०.००
२९. राज प्रजाधर्म प्रबोधभाष्य	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७०.००
३०. वेद-वीथिका	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१६०.००

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित । मो. : ९८३०३७०४६३